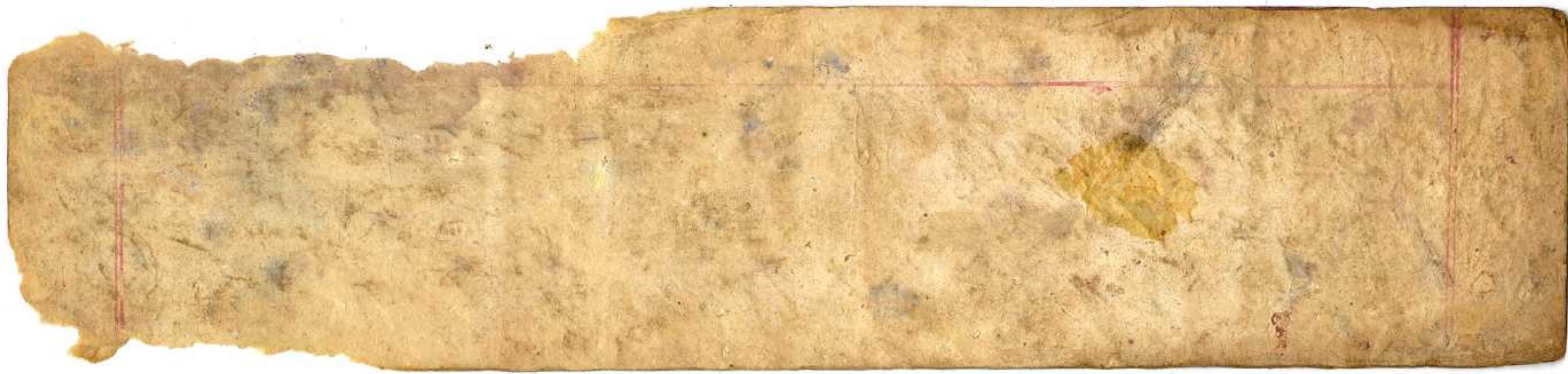








च

२

हस्यसिद्धिर्लक्ष्मीः॥ सजासावतनीप्रवृत्तिं सर्ववृद्धेः सूर्याचिनं॥ ४४ ध्रुवकर्मसमस्तमनुजान् धनं यनं॥ नाम्नायेक
लेखी ननु सत्त्वानामाभिसिद्धयेन॥ अयुकाधमिदं ननु अदृष्टमधुलस्यदि नान्यमधुलपुनितुस्यमनुज
कनुदधियेन॥ मधुलं यद्यु शीघ्रस्ययुविश्रामः समादिनः॥ अयुकाधमिदं ननु अदृष्टमधुलस्यदि॥ नान्य
मधुलपुनितुस्यमनुजान् कनुदधियेन॥ मधुलं यद्यु शीघ्रस्ययुविश्रामः समादिनः॥ ४५ ज्ञापनयनं यद्यु नस्य
मनुकनुदधियेन॥ गुनुरकः कृया नूतनमनुयानीयनायः॥ रुक्यधुधनं नि सं नस्यननुप्रदधियेन॥ ४६

गुवं वृद्धां धामयः कथिधगीलारम्बी॥ उन्नीतः॥ यद्यु संस्यमलादृष्टदधियेन मुरुमी॥ समस्तव्याधिरिगुना
विश्वमृगमलीकृतः॥ यद्यु संस्यमलादृष्टदधियेन मुरुमी॥ समस्तव्याधिरिगुना
ननकनीयनयाधि यदि वृद्धे स्यापिहि॥ यदिकर्मयां दयादुःखं शुकावजकुवत्सवं॥ मानुष्यायानेन
नीतगुवदं नरिशयनं॥ नस्माच्चमधुलं यद्यु नूतनमनुयानीयनायः॥ रुक्यधुधनं नि सं नस्यननुप्रदधियेन॥ ४७
दिनान्॥ नस्माच्चमधुलं यद्यु नूतनमनुयानीयनायः॥ रुक्यधुधनं नि सं नस्यननुप्रदधियेन॥ ४८

स्यप्रदिबुद्धसमादि ॥ अष्टादीनां तथाभिव्यः ॥ अष्टमजिह्वास नापव । रिप्रमृष्टिवज्रहावृष्टि कालनसंभयः ॥
 गभापनमभादिवि ॥ अष्टाभिर्गठवन्ताने । मनुष्यैककल्पावीनस्मिन्सुगुणैर्वर्णनाय ॥ ॥ ॐ शंकरे
 वीनायालीवधुमता नोवधनकुमकुवमानवटलः पुथमः ॥ १ ॥ अथरागवर्गिण्यवज्जीरागवत्तंवे
 धुमता नायधं गारुनालिजिह्वादि ॥ मधुलस्यकियत्मानवर्तनी मंथकनदि । लिखितवीनधामनमंम
 किं कुहमयुरा ॥ ॥ अथरागवर्गनाद ॥ ॥ मधुलस्यवर्तमानैवेकदत्तद्विदकं स्रक्तं दिदसं व

यतुः यथयमं नीन ताधिकं ॥ यस्यमस्येव दूर्ध्वननाभावर्णकननव । यदुनमृवगुर्धनं यदुस्मान
 घस्यभिर्न ॥ रागजं बाधुनेनेव द्वावर्गस्ययुक्ल्यपेन । दानमानननिप्रदमं नैकपालकं ॥ यक्ष्यवापि
 तथैव दीहना ददानयदि कौ ॥ मूलसुगुं वहिसस्यो यार्धनेवनकापुर्वी । वजावली ॥ नैव अस्
 म्भ्यैकल्यपेन ॥ दानगिगुनिनकर्म्यान् दानगाननमूलमं । विप्रवज्रमध्यलिखितवज्राका नवविष्ट
 नं ॥ कल्यवृक्षादिशिर्गुं वधुं नायधामेधुली । दुष्टमेककुकर्तव्यं वज्रकरिकपालकं ॥ गस्यपूर्वा
 यक्रव च निमंभुल

म

दिक् विषय प्रम हो समा लिखे ता न व म म ध म न स्य म ध र व उ स नी ल क ॥ व र ह वी कि न न व व र क
रि क या लि क ॥ ए व व की कि न र वे उं ॥ ए व र ह स मा लि खे न ॥ द क्षि ण यी न व र ह नु यु क न त्रे न सी लि खे न
। य म्भि म न क व र ह नु न क य म न वि द्वि न ॥ उ र न र व उ मा र्ग नु य म व र ह स मा लि खे न । व क ह वि द्वि
न क र्मि म त्रि न की । श म्भि ना लि खे न ॥ ने म र्ग यी न व र ह नु लि खे न न त्रे न सी लि खे न । वा यु वी व न थ म्भि
का न क य प्र स वि द्वि न ॥ ०० ॥ न र्ग य म व र ह नु नी ली ल स म न्ति न । व नु सूर्य व न स नु स र्व वि द्वि

४

४

ना २

प्र क ल य म् ॥ न र्ग म गु ल मि दी प्रा की म म ली का र्थ सा ध न । अथ वाम गु ल कूर्पा न य ह नू य ह सूरि लि खि न ॥
पू र्व म गु ल लि खि न धा कृ षा व ल लि खि न । स यु ट इ य व क्रा व यू र्व ० ० व ली लि खि न ॥ न थ यी न व र ह
स य यू र्व न का व ली लि खि न ॥ उ र न र्ग य म व र ह नु नी ली ल स म न्ति न । व नु सूर्य व न स नु स र्व वि द्वि
लि खि न ॥ वा यु वी लो दि न द वी ना ग व र्जी स मा लि खि न ॥ ०० ॥ न र्ग य म व र ह नु नी ली ल स म न्ति न । व नु सूर्य व न स नु स र्व वि द्वि
म म म गु ली । अथ म गु ला धि य न म नु ० ० व नि ॥ उं श्री वे ह म ता नी य ह स र्व वि द्वि न सि न श्री ग २

ॐ ह्रीं वंदोः॥ अग्रमं तुल्यं अग्निं नमस्कृत्य २ ह्रीं ह्रस्वस्वाहा॥ अन्ननाकं यत्प्रवक्ष्यामि वक्ष्यामी कल्पयुज्यते॥
 अथ पूजामन्त्रं वमि॥ ॐ कृष्णवर्णं वज्रयूषं प्रमिक्षं ह्रीं ह्रदं॥ ॐ अनामं वज्रयूषं प्रमिक्षं ह्रीं ह्रदं॥ ॐ
 पीताम्बरं वज्रयूषं प्रमिक्षं ह्रीं ह्रदं॥ ॐ वक्रावतं वज्रयूषं प्रमिक्षं ह्रीं ह्रदं॥ ॐ अनामं वज्रयूषं प्रमिक्षं
 ह्रीं ह्रदं॥ ॐ वक्रावतं वज्रयूषं प्रमिक्षं ह्रीं ह्रदं॥ ॐ अनामं वज्रयूषं प्रमिक्षं ह्रीं ह्रदं॥ ॐ वक्रावतं वज्रयूषं
 वज्रयूषं

प्रमिक्षं ह्रीं ह्रदं॥ ॐ अनामं वज्रयूषं प्रमिक्षं ह्रीं ह्रदं॥ ॐ अनामं वज्रयूषं प्रमिक्षं ह्रीं ह्रदं॥ ॐ अनामं वज्रयूषं
 दीप्यमानं धूपं गन्धं नेत्रं शरीरं॥ पूजयेत्तथा यथा शक्तं कुर्यात्तुल्यं ह्रीं ह्रदं॥ अथ पूजयेत्तथा यथा शक्तं
 कुर्यात्तुल्यं ह्रीं ह्रदं॥ अथ पूजयेत्तथा यथा शक्तं कुर्यात्तुल्यं ह्रीं ह्रदं॥ अथ पूजयेत्तथा यथा शक्तं कुर्यात्तुल्यं
 कल्याणं॥ कुर्यादकाशं विरुनं पूर्वशिवं कुरु समः॥ मधुलवनिवर्षो यथा शिनीया स गतं युनी॥ ६

राजयमममांसं वरुथि वृमृदुर्मरुः॥

गुलपटलः द्वितीयः॥

२

॥ ॐ ह्येकं नृवी नांवां नृवी ॥ व ह्यमदा नाय नृनम
॥ अथ रागवनी आह ॥ कथं भिक्षादव र्वा कथं मन्त्रापि नृके नि वि
॥ कथं कर्तव्यः कथं सत्त्वमदा प्रभो ॥ अथ रागवनी आह ॥ आर्धो गुसल
॥ धर्मः यं दामिध कर्तुं गुह्यं दृष्टान्नु (भामनः॥ गगनरवीरं वं किं आः न नृनस्येव दधमि नू। दूतगावर्ज

यदन्यमन्य भवो न व वृज न ॥ गगनरवीरं वं किं आः न नृनस्येव दधमि नू। दूतगावर्ज
॥ अथ रागवनी आह ॥ कथं भिक्षादव र्वा कथं मन्त्रापि नृके नि वि
॥ कथं कर्तव्यः कथं सत्त्वमदा प्रभो ॥ अथ रागवनी आह ॥ आर्धो गुसल
॥ धर्मः यं दामिध कर्तुं गुह्यं दृष्टान्नु (भामनः॥ गगनरवीरं वं किं आः न नृनस्येव दधमि नू। दूतगावर्ज

इयं

वायुर्वदशिषीविप्रनू॥ उं हन २ मानय २ सर्व भगुन हानखज हं २ रुट ॥ नगार्मयाभ शिषकः॥ नाम
दिमर्पयाभः॥ नस्य नर्क नीयन वावंमदसुद वायुर्वगुवगुश्रुशिषी २ प्रनू॥ उं ७२ द्वा २ कद २ सर्व
दूषणूया अनवन्ध २ मदासय धर्मन स्वाहा॥ नगार्मनामाशिषकः॥ शिषीयलुमता नायहामूद
मायुवि ॥ मदाका जे १ यलुमंमालं ॥ उं द ७१ रागवनूक स्यावलसिद्धि त्विहं २ रुट ॥ नगुपूर्ववगुश्रु

२२

शिषीयनू॥ प्रकं वसाकस्य कृष्यदिवर्ग ॥ रुदनययावलनामाशिषकादयः॥ नूनिर्पयाशिषकः
मीगागुमकूटाशिषकं स्य कृवा सिधूनाशिषकं दद्यान्॥ वलुमतादविनूया शिष्या आलम्बि॥ उं उं रागव
नी आवि ॥ २ अस्मिदं दयं हं २ रुट ॥ लोहादिक र्दिकीनस्यादक्षिण दक्षे दद्यान्॥ उं कर्कसर्वमाजा ६
नीमसि कर्कस्य दयं हं २ रुट ॥ वामदक्षे नकयानं दद्यादिक नवा दद्यान्॥ उं वं उं कया लसर्वसगुनं

हं॥ का

धनिकधनप्रदं हं॥ नदरुगवनी मद्रमाय विष्णुमदा कात्रघात्रं व्या॥ उं॥ उववजिसिद्ध त्वं हं॥
उर्वस्त्रीयं कृष्णदि वर्धरुदनयं यथा गिनी नान्ना शिषिं वनू॥ आसा कुपुष्पा शिषक कस्तुरि जयाया शि
षका रावनि॥ अथ ग्रन्था शिषका रावनि॥ शिष्या उनुं वस्तु दिशिः सैयुज प्रभू॥ न ह्ये स्वप्न नावां चि २
नान्नयं प्रोक्तं मन्त्रिनी निर्या न प्रभू॥ ०००॥ निर्या मिना तुल्यं सर्वकामा सुख पुदा मय काम सूर्य न ग

दप २

रु २

इनाथ कयां कन॥ नगा गुनं नमस्तुत्यः॥ शिष्या वही न गच्छन्॥ उं॥ यद्यु मदा नावहा हं॥ ०००॥ नमस्तुति
यं निष्कृन्नु नूयनः मद्रमां सा दिशिना त्ताने यजयित्वा पुष्पा २० सैमय्य सैयुटी रूपः नदु हं॥ न गच्छ
सो निगैयुर्ह्यून नो दाववस्तु शिष्या॥ नाहु दय गस्य जिह्वा ग्राम नासिका उं॥ कायां डव्यं गृहीत्वा
हं॥ हं॥ का न निरखन्॥ नगा मदा सुख निगिया ठ प्रभू॥ न गच्छे वदन्नु अथा हं॥ न वृद्ध सान मृत्या दयामि॥

वगत्वीयनमः ॥ ॥ अथ शगवानाह ॥ ॥ मनोः नूक नूकं दधसर्वविद्रववर्जितं । आसर्तक
 ल्यप्ररुद्रुप्रथमं धीसमादिनः ॥ यथमरावमस्मेति द्वितीयं कनू भं विरावयम् । रुमीयं रावयम्
 मृदिनां उद्यक्षा सर्वलक्षणः ॥ गनाहदि रावय द्वितीयं ययन विह्विर्ग ॥ नक्षिः यूनगो ध्यायान्
 निष्यन्तं वधु नावर्ग । यज्ञप्रमनसागच्छ पूष्य धूपादि शिर्व्विधधः ॥ गदगुदभयप्रायै सर्वयुधैषु

मि २

दा

मादयम् ॥ मिसत्रैर्गमर्कं मीद्यायनाधख नामधि । आत्मानं यनगादत्वायूधैश्चयत्रिनामयम् ॥ गग
 युनिधनं कृत्वा वा धि विरुद्रु नामयम् । नमस्कारं गगुः कुर्यान् नक्षिः सहनयूनः ॥ यठित्वा मन्त्रमम
 दिभुन्याना ध्यानमायनेम् ॥ उभुन्याना सोन वज्र खरा वा त्रकाहं ॥ विंरुयप्रस्मिः दग्धसहं कारयम्
 त्रगः ॥ कर्षुनदाहर्न ध्यात्वा त्रस्मिन् यथिन कल्पयम् ॥ सर्वमाकाशसंकासं सहा मर्षी विरावयम् ॥

भुङ्क्षुटिक वस्त्रेकुमात्मदस विराजयन् ॥ अग्रगण्यवपय्यभ्यर्चयन् नलं वं वदुष्टम् ॥ निष्यन्नं रा
 वपय्यन वान विरुद्रुला न्धिकां ॥ प्रकाशं वगमा चो ध्यात्वा कूटी गमनीयक ल्यपेन ॥ वदु नर्म वदुर्वा
 र्वा अष्टसु सुपुष्पा शिर्ष ॥ ध्यात्वा सुसुध कयपी विष्णु मसू दनान्वितं ॥ यं काशं वीरु मजुर्न मग्रा कण
 वपय विधु ॥ न विनं शान काश ॥ न दूर्ध्वं कर्ण पूनः ॥ नर्क न्या मक्षया ध्यात्वा सामका सहसं पून ॥ स

कमल गुप्ता गितु मस्या मूर्ध्नि दिव्यते ॥ नाना संक्रान्ति योगेन मामकी राग यमसा ॥ ननु भुक्त्वा नसी पुनः
 परुष्टु स्यात् ॥ न दने ॥ निष्यन्नं वदु नूयं वनिः सत्र वरु रग रुमः ॥ हन्यात् रुके न वा क्षीर्यं यि न न य
 ध्यात्वा सप नमा म कायी नमस्तु ॥ न हि न वै प्रक ल्यपेन ॥ नना हि मामकी गृह्य माननं सी प्रका
 भयन् ॥ नयाः वी त्रिं गिर्न ध्यात्वा नूद्वयवत्री स्व नूयकः ॥ ननु ग ॥ न क न स यं वा मया न सम चिन्ति ६

नः॥गर्जनीगर्जयनं वडं शुभं निधीदनी॥संज्ञात्रयदं सद्यः शत्रुमंत्रविमर्दनी॥वामरुमिसुज्ञानू
२॥ककवाक्षरयानका॥स्वैवसूक्ष्मगर्जयं नु वामज्ञानूयमःसिद्धः॥शुभाशुभकर्ममोलिकुनी
लनत्रंकिनाटिनी॥यश्चभीर्नकुमानश्चसर्वलंकानेपुष्पिर्नद्वित्रसुवर्षाकालश्चत्रकवदू
द्वयविधुः॥संज्ञात्रयसिलयिरुनसिद्धाहंयद्युनायनः॥नमामन्त्रादिप्रयोगनपूर्वप्रमाणवतं

१३

॥॥॥गु॥माहवत्री॥॥॥रुद्रेणोसत्रकालसमयुरं॥पीमात्र॥॥॥रुत्सर्वपिभुनवत्रीरुनेअलः॥
पिनांवकांयत्ररुद्रेणयुत्रकांयनाजवत्रीवायूव्यशरुत्र॥॥॥मायनं॥॥॥ममी॥॥नके॥॥॥व
त्रीसुद्रेण॥॥॥य॥॥सप्रज्ञादूमिमावहेन॥॥॥दयकिननादयः॥॥॥चकन॥॥दिनगीनिरिः॥॥॥प्रहिमेगी
पुविवर्किआहहिमासन्नसहाव॥॥॥॥॥विरेहिटमिसर्वसवहिराव॥॥॥माहवत्री॥॥॥माक
वृ ना झा

नृणां विष्णुं दृष्टिं दृष्टुमाप्तादिगुणपन्नः ॥ मां भाऊ दद सुदुःखं अहं ॐ ह ॐ श्री वविज हव ॥ यि
 भुन वज्रा ॥ कि सगुह वि सि हा दि असू न सि क न सि यु व ॥ ॥ गार्ङ्ग नि म नु न क नि अ म ॥ अ
 ॐ ॐ ल अ अ ॥ ॥ ना ग व ज्ञा ॥ ॥ या व न म नु मूर व वि ॥ अ नि क ल न न व ज्ञी ॥ सु
 न स हा व वि ॥ ॐ अ क न दि गु म न स म द धि ॥ ॥ ॐ श्री व ज्ञा ॥ ॥ स्व प्र ने व यी द ॥ ॐ वा

१४

नीम
 इव अ टि मी ॐ लि नः ॥ पूर्व क ॐ व नू य न ध्या यं न वं पू नो त्म क ॥ ग नु ॐ न व न क चा मा द व जी य
 का ॐ य नू ॥ नू प ॐ न व न क चा यूनः यी न व न द न नू ॥ का म मा ति य भु न व जी नु ना यी ना व न
 स र्क द वा न का व न ग द का म यें ड ग व जी क चा न का वा स न द न्या न ॐ न मा मा य न यूनः ॥ ॐ
 श्री व जी ग नः का म क चा ॐ व न स र्क ॥ अ नू प्रा ग व नु द द वी स द न स र्व म द ह ले ॥ सी य न

कां२ २२

मउद्वागमनकाकोयदायागिपुशंदनः॥कक्षदंविभाविप्राःपीन॥अधुनकोमःवकनुन
रयैः॥अमःमृगजक०॥एयि॥कक्षक॥विभालादीकामपेकक्षरावकः॥सिगकंयासिगं
नोमनुपीनकंयासूपीनकः॥नकोनकायकयानु॥अमकयानु॥अमकः॥कूर्योनांश्रुथवा
रहमंरांवंरावपेरावनात्यलेः॥कामपेसिलविलेनयथकपिनवूदंअन॥नमःसिद्धि

की१

१५

प्रा०

प्रा०

प्रा०

दित्तंविदत्तं

नाकन्याःपक्षमागुपुमागनुः॥आशांशुकुरावदुर्जंकेकपसर्वमात्रीदनु॥यावन्निद्रूपिवत्सर्गु
मासीमर्ग्यरागंधमूर्ख॥गुदयप्रवाय्यवेविष्टमावदिष्टैपुर्वदामनु॥नकरुय्यौषधाल्यायिसि
पुंदिष्टसाधन्यथारवनु॥निजोहात्रमिदी॥प्रवृत्तसर्ववृद्धःपुकांराजिर्गं॥॥००॥कनवीवा
ध्यापीवकुमहावायवमकुंदवलेकयटलःवगुर्थः॥४॥अभगसंपुवकाभिसर्वमनु

प्रा०

घ

致

[illegible]

पुन

व्याधि

[illegible]

नरुक्षसर्वानुकूल २ किलि २ महाविष्णुवज्रहृद्दं दं उगुवनिगनीग नरुक्षदं दं ७ : अग्रसदं
 नैरुदु सुदु प्र २ दं दं अग्रसममं कर्क मलावलसामं यसमानय, शांतां ७ उगुलोकः नुयं नुवतिन
 मासु युतिदगवलस्यः नालय ग्राहसहनमः स्वाहा ॥ द्विगीयमालामनु ॥ नमः सर्वासीय निपूक
 त्यः सर्वग थागनस्यः सर्वगं भागम अक्षाय यदु नायन हं हट् ॥ सुदु यदं अमय २ गगुहं मां ॥
 हुं

१८

रुगीमालामनु ॥ पूनिय सुगिमीमनु ॥ विष्णुमनु ॥ उं हस्यवलदं दं ॥ उं अनावलदं दं
 दं ॥ यीगावनदं दं ॥ नकोव नदं दं ॥ अनावनदं दं ॥ देवीनामामयमनु ॥ उं वज्रपाणिनीयं
 दं दं ॥ मूलमनु ॥ प्रसाया नमिगं दं दं ॥ द्विगीयमूलमनु ॥ उं वीहलिकं दं ॥ रुगीयमूलमनु
 मनु ॥ यिदु २ प्रसावा धं निरुलमधवदनि, धिनि २ वदिवदनी स्वाहा ॥ मालामनु ॥ वि

५५

[illegible]

42

१२

[illegible]

रावमइ कयिरुनममयुयमहनिर्ण॥ कल्पयस्वस्त्रियंगवरुवयुयनविधेनिरर्न॥ गरुनेवामि
 मागुगप्रथेवस्त्रिगर्गवुर्गु॥ माननयिगर्गययिरुगिनिगर्गनिधिम॥ अन्माथस्त्रिगर्गनि
 ३१ वीर्द्धोस्त्रिगर्गवुर्गु॥ वांछांस्त्रिगर्गनिगर्गनिधिम॥ अन्माथस्त्रिगर्गनि
 कायाविनीमूनः॥ अन्माथस्त्रिगर्गनिगर्गनिधिम॥ अन्माथस्त्रिगर्गनि

नीर

२०

ज्ञायम॥ इदमुक्तकथ्यतुनाम॥ इति साधकं प्र॥ अवितीत्यामयमुक्तकथ्यतुनाम॥ इति
 लोकसर्वसिद्धिः यन्मार्गं कथितं यथेव॥ मन्त्राजुक्तं यन्मार्गं कथितं यथेव॥ अवितीत्यामयमुक्तकथ्यतुनाम॥ इति
 यैवमुक्तं यथेव॥ अन्माथस्त्रिगर्गनिगर्गनिधिम॥ अन्माथस्त्रिगर्गनिगर्गनिधिम॥ अन्माथस्त्रिगर्गनिगर्गनिधिम॥

राधिनं२

पतिंगुस्वस्वनूयः ॥ गभरुहावगसास्त्रधिः ॥ निर्जुनयाधर्मकत्वायथाल्पानूवसु, कः ॥ रावयतिरिर्वं
 दार्यामन्यान्यद्वन्द्वयोगनः ॥ लिप्ययस्यद्वानः कत्वास्यसूखा वायव्येयन ॥ दार्यामन्यान्यनागगभरु
 मन्ध्यामिच्छप्रग ॥ नगादृष्टिसूखेध्यामिच्छेदकाग्रमानसः ॥ नयानवेवेवकवीसूखाकः कनेवव ॥ २१
 त्वमयुगसिररुकेविः ॥ नमप्रागापिमानस ॥ नवाहर्जननिराम्यरागिनीवयामनयिका ॥ सफरिः पू

नृपेदासः त्वमेवैतत्सर्वकः त्वमेकयवकक्रीडः गवाहं स्वाभिनीमना ॥ यत्तु वृत्तनमीः नस्यातिरिचि
संपूटीरुनिः ॥ वदरुष्टेष्टुर्वाक्यं श्रुत्वा मरुः कत्रयनं ॥ त्वं भगं मानाधिगारार्थं त्वं भठराग्नेमि
का ॥ रुग्निनीयूत्रशार्प्यं त्वं स्वमा त्वं श्मसिका ॥ गवाहं सर्वदा दासभिव्यरुकिय नायनः ॥ य
स्यसीकृपयामानः ॥ स्तददृष्टिदिनिर्दिष्टः ॥ नमः सायनयच्छावन्वयित्वा मूढमूढः गदा
द

^कनिरुद्धमसकैवकुवक^कनसंसम् ॥ यद्यथा^नलयेनेस्यद^नपिगुस्यविप्रम ॥ वक्रोवर्षे^{वि}निगंदत्वाकवध
 नवीदयेदुध ॥ समुर्वीगस्यसुखदृक्षसुखंप्रसाविगानम ॥ यदरुह्यदृष्टिवाकुरक्षवेनायनीसम
 यित्वा^नश्रास्यजर्ममूर्ति^{वि}सयिगदासकीरवेन ॥ नव^नजंस्वामिनी^{वि}वांहीमाना^{वि}नाउकूनीत्ययि ॥ मदी
 प्रंयननीग^नकुसुनन^{वि}वसनिनकनी^{वि}मयासर्व^{वि}दिग^{वि}प्रसमानूचमानद्यमयागनः ॥ कुरुक्षेत्रवरा
 म
 लपुत्र

३२ वेव२

वत्सदहिमवज्रमेसुर्व ॥ गिदलंयंकर्जय^{वि}अस^{वि}धकिंरुकरु^{वि}विग ॥ अहासुखावनी^{वि}सगुनक
 विन्दूय^{वि}अशिनी ॥ नागिनीसुखदी^{वि}अनी^{वि}सर्वक^{वि}ल्यविवर्जिनी ॥ मामूलानन^{वि}सयी^{वि}द्वेनागविद्वलमा
 नसी ॥ स्वध्यादयूजंदत्ताममा^{वि}धर्डीनिनी^{वि}दाय ॥ सुनद्वज्रक^{वि}यद्रम^{वि}धन^{वि}धयुवसय ॥ दहिधय
 सहस्रत्वंलक्षकोटिमधवूदी ॥ मदीयंगिदलेयप्रमांसवर्किसमन्विग ॥ स्ववर्जंगप्रप्रमिष्यसुखे

भिः रुद्रपुत्रः प्रोवाय वायु स्वयं ममाना तानमनूरुनी ॥ वज्रस्याग्रनसं वृद्धं न कवन्धक संसं निः
 री ॥ धं वृष्टं निमिनिनां ध्यामं न द्विरुयै कथं न सा ॥ रावप रुर्जकी सोखी निष्ठया गमर विरुगः ॥
 नसं येयु एरुनं दद्या विद्वन म्बवं तीयुय म्हा ॥ यावत्सी ददगी नृपं दधमा ॥ ग्रं विविक्तया ॥ स्त्रीमका
 रुत नारव नृ विरुगमी स सोखा दग्री भिवा ॥ विद्वखा दिह निर्दयं कि म्भुख नाष्टु पाय कर्म विगाने
 रु

२३

न नेवदू नावगम हत न के नोद्र सदादूः खगी ॥ क्रन्दगा वदू वदू दध ववो सिष्ठ नि कल्यग्रयी ॥ किं वाप्य
 नृगुह स्त्री नी सर्व सत्त्वय निग्रहः ॥ कया या प्रदिवा न ददा स्त्री नां विरुपु मिष्ठिनी ॥ आसी ना वत्स
 रुनी यत्र रुन मपि यूष्मा गिरि क्षमा ॥ सा दद वं नृया ना न्ध ॥ स्त्री कया भिग्याः ॥ आसा नु दर्शन नाग
 साः स्युष्टिष्टिष्टि वदू वनः ॥ प्रत्याः स न गमाष्टि ग न हर्ष ल र्ग न सुखं ॥ यथैव विवस्त्री नां दिव्य
 म२

संज्ञा

वि

न

नृपहासंकिनी ॥ गमूडादिनी कृत्यत्वां सूरवंधु उनिमानवाः ॥ गमूडा दोषोर्मूकसर्वसंगुहामकिनी ॥
 पूष्पपूष्पमहापूष्पप्रसादकूत्रु अन्तिके ॥ गमूडा गमूडां दृष्ट्वा उदकनयि उग्रम् ॥ कूर्वनुभी का
 कं नैयाजीगा ॥ कूर्पादिनजिनिकी कूर्पासुरादयं वन्धुपुयै ॥ २४ ॥ वन्धुजानुग्रहयेव वन्ध्या
 यूपमदतः ॥ यादवानगवन्धु ॥ वन्धुसमदमक ॥ वन्धुवन्धु ॥ वन्धुवन्धु ॥
 वंधं व १ वंधं २ व २ रु

२४

कं ॥ प्रमतीत्रात्र वन्धु ॥ यमका नूदी ॥ इपादकीन ॥ थेव कूर्म वन्धु ॥ सर्वगारुड भवव ॥ गगुययि
 कम ॥ धमगुलिप ॥ कूटकासनी ॥ कृत्वा वा दूयुगं स्वे ॥ न्वस्वस्य गगनयात्रयेन ॥ स्वस्य त्रादूयुगं गम्याः
 कदमध्यादिनिर्गम ॥ यद्राप्रक्षिप्य वज्रनुरवाणा वन्धुसुरादयः ॥ द्रपार्हसु मृगवेणी वद्धनीय
 प्राज्ञयेन ॥ ॥ वृणीव च वालयद्वा ॥ ल्या ॥ योगाय दालन वलिन ॥ गम्या जानु द्वयं स्वस्य हृदि कृत्वा गुरी
 ल्या

नमः सद्ययदंस्तुधे वासं सद्यो नमः ॥ उरु पादा सुयं वन्द्यो सं सरोदुःखनामः ॥ नमः पादगले
 पादपूरीदत्तास्तुधे वासं सद्यो नमः ॥ उरु पादा सुयं वन्द्यो सं सरोदुःखनामः ॥ नमः पादगले
 सर्वावाभा नमः ॥ नमः वक्षःस्थले निपातयन् ॥ वाङ्मयिणी उग्रजन्तु के सर्ववन्द्य उदाहृतः ॥ ६
 नमः पादगले नेत्रकर्तुः सुद्विनिपातयन् ॥ वक्षःस्थले सर्वगोपः सर्वकामसुखप्रदः ॥ त्रिगुणैर्गुणैः २६
 नमः पादगले सर्वविधिगुणैः ॥ उग्रजन्तु उग्रजन्तु उग्रजन्तु ॥ वक्षःस्थले सर्वगोपः सर्वकामसुखप्रदः ॥ त्रिगुणैर्गुणैः
 नमः पादगले सर्वविधिगुणैः ॥ उग्रजन्तु उग्रजन्तु उग्रजन्तु ॥ वक्षःस्थले सर्वगोपः सर्वकामसुखप्रदः ॥ त्रिगुणैर्गुणैः
 नमः पादगले सर्वविधिगुणैः ॥ उग्रजन्तु उग्रजन्तु उग्रजन्तु ॥ वक्षःस्थले सर्वगोपः सर्वकामसुखप्रदः ॥ त्रिगुणैर्गुणैः

नमः पादगले सर्वविधिगुणैः ॥ उग्रजन्तु उग्रजन्तु उग्रजन्तु ॥ वक्षःस्थले सर्वगोपः सर्वकामसुखप्रदः ॥ त्रिगुणैर्गुणैः
 नमः पादगले सर्वविधिगुणैः ॥ उग्रजन्तु उग्रजन्तु उग्रजन्तु ॥ वक्षःस्थले सर्वगोपः सर्वकामसुखप्रदः ॥ त्रिगुणैर्गुणैः
 नमः पादगले सर्वविधिगुणैः ॥ उग्रजन्तु उग्रजन्तु उग्रजन्तु ॥ वक्षःस्थले सर्वगोपः सर्वकामसुखप्रदः ॥ त्रिगुणैर्गुणैः
 नमः पादगले सर्वविधिगुणैः ॥ उग्रजन्तु उग्रजन्तु उग्रजन्तु ॥ वक्षःस्थले सर्वगोपः सर्वकामसुखप्रदः ॥ त्रिगुणैर्गुणैः
 नमः पादगले सर्वविधिगुणैः ॥ उग्रजन्तु उग्रजन्तु उग्रजन्तु ॥ वक्षःस्थले सर्वगोपः सर्वकामसुखप्रदः ॥ त्रिगुणैर्गुणैः

दश्या २

स्त्रियाः॥मर्दधत्यादिनार्यव वृषधेदेभप्ररुणः॥स्वप्नसूक्तानिर्वाकत्वाब्रूमचयत्सद्योदनः॥अने
वाहंसिगःपूर्यस्तृत्वास्तृत्वा मूर्द्धर्मर्द्दः॥हस्तेनस्यभमित्यनीनाम्सन्दननिर्दंकवन॥विश्व
ब्रूमचनखनकुप॥धनिष्कस्याद्यादिना॥घ्रात्वागन्धश्चन्द्रध्वं॥मधयेद्रसनयाक्षिप्रः॥
युविष्टाहमथनेननिःसृग्भावा नेकमः॥वेदरुग्दृष्टीवाक्ययन्ठायनासिकाजइः॥अ

26

५२

五

[illegible]

हृन्नाथम

मानसः॥ शनिन वा निहंत्य प्रीतान् याद प्रयत्नः॥ राक्षस्य दग्धं गंगं भुक्त्वा निवापि त्रिदश्या॥ ना
 सयानलिकाया गतिरित्येव सामर्थ्यं वृद्धये॥ प्रक्षाल्य त्रिदश्या यदी प्रक्षाल्य यन्त्रयेन॥ श्री गौ कृत्य
 गनः यथा हस्तस्य समीपकं॥ यिव हस्तस्य मर्मावायूनः कामयुव वृद्धये॥ भूमि जीये गनं यथा
 दिक्षु मा सुमुख्यादिभिः॥ यतः पूर्व क्रमैव वृद्धयेन न्यमानेन॥ शून्यता सा सया ज्ञान साधिगं

२८

गी

वमहा सुखी॥ वक्तुं नायथा दधरु यन्मन्यते वया गंगं विनू॥ नागिं धीं सिद्धिदानार्थमया प्रागः पु
 काभिगः॥ सव्यर्था यानि कथाय नाम र्जुधा तुलीलमा॥ ख्याभाय सत्त्वयर्था कः सर्वकाम सुख प्र
 दः॥ यप्रयर्था कमावा ध्व नाम र्जुधा र्जुयर्था प्रनू॥ लीलमा सव्यर्था कः वक्तु यर्था कः कः सुखः॥
 रुद्रो यानले कथाय समीपं मुखदीर्घकं॥ सर्वकाम प्रदं यव गङ्गुकी त्कुटू काभनं॥ रुद्रो यादगले

८

मर्च्य २

वरुणीर्षक
 स्थाप्य समसमैर्मुखैर्दीर्घक ॥ सर्वकामप्रदं वैवर्ण्यं कर्मिण्यस्तु दीर्घक ॥ सर्वकामप्रदं वैव ॥ अथ यथा
 सनीक्ष्य भक्तकामसूखप्रदं ॥ निर्यग्रस्तान्मूर्खान्मोघुल्लभ ॥ धनुर्वर्क ॥ कृत्वा धनं सनं वैवर्ण्यं
 दिव्यकामसूखप्रदं ॥ सर्वयज्ञमथावर्जय्य कर्मिणि कल्पितं ॥ उक्तुर्द्वयार्धवन्द्य अध्वना
 सनसिद्धिं ॥ अथ यथा सनासीनास्तु प्रकृत्वा निवर्तनं ॥ यमिवास्तु लिख्य प्रगृह्णन्तु
 धि

२२

अथ यथा ॥ यथा ॥ सर्वयज्ञमथावर्जय्य कर्मिणि कल्पितं ॥ उक्तुर्द्वयार्धवन्द्य अध्वना
 सनसिद्धिं ॥ अथ यथा सनासीनास्तु प्रकृत्वा निवर्तनं ॥ यमिवास्तु लिख्य प्रगृह्णन्तु
 धि

वनीयुमदिनदुदयारगवर्गनमस्तुत्याहिवन्द्येवमाह॥ ॥^{६५}रगंरगवन्किंनरभभवकवलमंभव
साधनायायाःनमामे।मयिवा॥ ॥रगवानाह॥ ॥अग्रानूत्रकाप्रसत्वाःसमंर्वदिसूचवलि
नः॥देवास्तुनननागमस्तुपिसिद्धाकिंसाधकाः॥अथेर्वभूचोमहभवादधादेवाजोनीलक्री
सवीत्रेत्यादिदत्तमीगृहंहीत्वा रावप्रिनुमानदुः॥अथनगूदहीसर्वमदवमदवैर्वनमस्तु

३०

^{नर}रुर्कवतुनायवपदपाकाविचनकिमहीनले॥नगमहभवावज्जकिवचिनसिद्धः॥^{धूमि}वासुदवाह
वज्जनानायवस्वनदवन्द्यावज्जयाहित्वेनकामदेवावज्जीगत्वेन॥प्रवीयुमूवागंजनदीवालूकाह
समादवपूनाःसिद्धाः॥यवभकामगुहभवाःसर्वसत्त्वार्थकावकाः॥नानामूर्तिधनाःसर्वरुणा
मायाविभाजिनाःनाः॥प्रथम्यकाहवीयपीयंकदावेर्नलियना॥नथनागनप्रहृणालियननव

द्विधा शोभति या जगति स सिद्धिनि ॥ शरीरं वा यदि ब्रह्मं वा हृदी सर्वं येन कल्ययन् ॥ कार्या कार्यान्तं यथा गम्यते
 गम्यते येन वा गविनू ॥ नयुष्मन् नव वायाय स्वर्गभा दान कल्ययन् ॥ सहजानन्दे कर्म हितुं सुखिषु श्री जी समा
 हीनः ॥ नृवीथी या गम्यते माया जी यदि स्याद्भावनायने ॥ बहु भाष्ये कथा ज्ञानमदाहं कान्दं न कथा ॥ नृ
 वेदि बुद्धिदिग्दर्शनं ह्यापदि पायेन लिख्यते ॥ नस्मादर्व विध नार्थ ॥ रावयत्तु भाष्यं ॥ येनेव न
 य

३२

५२

३

नृवीथी या गम्यते माया जी यदि स्याद्भावनायने ॥ बहु भाष्ये कथा ज्ञानमदाहं कान्दं न कथा ॥ नृ
 वेदि बुद्धिदिग्दर्शनं ह्यापदि पायेन लिख्यते ॥ नस्मादर्व विध नार्थ ॥ रावयत्तु भाष्यं ॥ येनेव न
 नृवीथी या गम्यते माया जी यदि स्याद्भावनायने ॥ बहु भाष्ये कथा ज्ञानमदाहं कान्दं न कथा ॥ नृ
 वेदि बुद्धिदिग्दर्शनं ह्यापदि पायेन लिख्यते ॥ नस्मादर्व विध नार्थ ॥ रावयत्तु भाष्यं ॥ येनेव न

सुख २

३१

व३

卯文

मं॥ यदि वृत्तमनंदन्यासां विषयार्थेन लिख्यते॥ मदीयं त्रयं कौमाध्यमसहाकौ (धेक) ठेगता॥ मानयत्नस्य
पक्षी॥ यैः जिनां वै लिख्यते॥ निर्द्वयं त्रयं कौमाध्यमसहाकौ (धेक) ठेगता॥ मानयत्नस्य
प्रकाशितं॥ ॥ पूर्णकौमुदीनां त्रयं कौमाध्यमसहाकौ (धेक) ठेगता॥ मानयत्नस्य
रुगवान् रुगवतीयः सधुर्लनेन सस्कृत्याह॥ ॥ त्वदीयं पाणिना त्रयं कौमाध्यमसहाकौ (धेक) ठेगता॥ मानयत्नस्य

22

५५२

रुगवनीयावाधिमाकनयागिनीवारविषमि॥ ॥ अथरुगवत्याह॥ ॥ यावद्विदुश्चमह
लाकस्तीनैयुवनवयम॥ गन्मदीयमर्गनूयनीयानीयकूलगर्ग॥ दवीवासनेयैवप्रक्षीनीना
क्षसीमथा॥ नागिनीरुगिनीकन्याकिन्नेनीमोनूषीमथा॥ गन्धर्वीनानकीयेवमिर्गककन्याथप्रमि
का॥ व्राह्मणीक्षत्रिणीवैश्य॥ शूद्रायास्तनविस्तना॥ कायस्तीनाशूयूगीवभिषिनीकलजलिनीध

वशिष्ठिनी वात्रिणी वेध्या वां उत्रिणी कर्म कालिणी ॥ कूत्रिणी शम्बी या दुर्गती भवत्रिणी तथा ॥ ८५ ॥
 विनी सोमिनी गद्य वात्रिणी कर्म कात्रिणी ॥ नाथिनी नटिनी कुन्त कात्रिणी स्वर्ण कात्रिणी ॥ केव
 र्णी खट की कुन्त कात्रिणी वायि मालिणी ॥ कायालिनी भस्विनी येव वत्रिणी च कुन्त लिनी ॥ ८६ ॥
 ली कुन्त कात्रिणी कात्रिणी वायि मालिणी ॥ थयानिनी सैकैनी च सर्वज्ञाणी समा वृणा ॥ माना यशसि
 टी म डि

३४

नीरग्या मा भि काशना नमिना ॥ ८७ ॥ हृदि काय त्वसा येव श्रुत्या च सर्वज्ञा निनी ॥ बुनिनी प्राणिनी येव ॥ या
 न्ना वायि नयस्त्रिनी ॥ ८८ ॥ आदि वदवः सर्वाः स्मिन्ना मद्रूप संगताः ॥ स्मिन्ना येव सर्व सत्त्वार्थ स्वत्व नूय
 गानि स्थिताः ॥ नासा भवयथा लक्ष्मी यन्त्र नास्त्रिंशत्तादिदिः ॥ कूत्रय प्रसमा प्राग्म प्राणिनी रानि सवि
 विनाः ॥ सविना स्मृ स्मिन्नाः सिद्धि सर्व सत्त्वदि विमो विधा ॥ दद नि ददामा द्रु शन समात्सी सव प्रमि ह्य ॥

सिद्धः स्वर्गः सिद्धा धर्मः सिद्धः नवधर्मं मथं यः ॥ सिद्धा वृद्धः सिद्धः सीधः ॥ यज्ञाया नमिना सिद्धः ॥ य
 श्ववर्धु यरुदन कस्त्यनाहि ननामनः ॥ नीलवर्धु नुमाना नी द्वेषवर्ती निकाहिना ॥ ७५ न जने नानुमा
 नानी भासवर्ती हि सामगा ॥ यीगवर्धु नुमाना नी सादवी यिभु नवजिका ॥ न क ॥ जे नानुमाना नी नागव
 कीयकी हिना ॥ ७५ न व ॥ नुमाना नी ७५ न व ॥ निकाहिना ॥ न क ॥ जे नानुमाना नी नागव
 कीयकी हिना ॥ ७५ न व ॥ नुमाना नी ७५ न व ॥ निकाहिना ॥ न क ॥ जे नानुमाना नी नागव

३५

७५

ना ॥ यज्ञाया नमिना सिद्धः ॥ य
 श्ववर्धु यरुदन कस्त्यनाहि ननामनः ॥ नीलवर्धु नुमाना नी द्वेषवर्ती निकाहिना ॥ ७५ न जने नानुमा
 नानी भासवर्ती हि सामगा ॥ यीगवर्धु नुमाना नी सादवी यिभु नवजिका ॥ न क ॥ जे नानुमाना नी नागव
 कीयकी हिना ॥ ७५ न व ॥ नुमाना नी ७५ न व ॥ निकाहिना ॥ न क ॥ जे नानुमाना नी नागव
 कीयकी हिना ॥ ७५ न व ॥ नुमाना नी ७५ न व ॥ निकाहिना ॥ न क ॥ जे नानुमाना नी नागव

[illegible]

दौमासमानाधयद्विनि॥नकूर्याचरणीयाधनार्नदोनुदूर्गो॥रयंकूर्यानुलाकस्यपावगूणाकि
 नलस्यग॥नयार्यनविद्यनकिश्चित्तयूधकिश्चिदसिद्धि॥लाकानाविरुनसाधेयाययूध
 व्यवसिगः॥यिरुमार्गप्रगःसर्वसहसामगुश्चनसिद्धिः॥ननकंगचनकाशोकाशोस्वर्गप्रमा
 निद्धि॥प्रथेवर्गकनामूर्यस्वर्गकल्पविषयुरी॥विषारावायिसंप्रानिगथास्वर्गमध्यागर्नि॥८

प्रवर्तयन्निज्ञानानिर्वाहयन्वद्वेः॥निर्वाहीभूयन्त्यनुप्रदीयस्यववाग्नः॥मरुदेवयज्ज
 सोयिनवाधियदमभूत्॥मस्मात्सर्वयत्रित्यत्रमामेवात्राधयद्वती॥ददामिद्वहमाग्नवद्वहसि
 द्विनर्त्तसीमाप्रः॥अथरागवाकृगवनीयुक्तायात्रमिनामाह॥ ॥किमाकाग्रीरववृक्षस्यसि
 द्विकुकीदभी॥ ॥अथरावत्याह॥ ॥यथैवर्ह्यपुनरदनाग्निनापाःपुकीर्तिनाः॥गासीयस्व

२७

स्वर्गः॥यथैवर्ह्यपुनरदनाः॥वह्नाभ्यसर्वप्रवेगयाग्निनागुमंभ्यादिनाः॥नीलवर्ह्यनुप्रारर्ण
 सवनीलायलःस्मृत्॥॥॥गजोत्रादिप्रारर्णस्यवतावलसीरुकाः॥पीनवर्ह्यदिप्रारर्णसख्या
 नःपीकायलः॥नकरुमेनादिप्रारर्णस्यकायलउदाहृतः॥॥॥वर्ह्यदिप्रारर्णसख्यानः॥॥म
 कायलः॥नकनकरवद्वहः॥यंयनूयनसीरुगः॥नृष्यवहसमारयामाहस्यसिद्धिहरत्वनः॥याव

३

दाभयम्यनंदिवनूपयदासंलिमिः॥ बहुसिद्धिर्मथेवाकानथवह्नीयुसिद्धिनि॥ ॥ पूर्यकनूवी
 मारवाभीयं तुमहाभाषणं न केत्वनूपयटलासुमः॥ ८ ॥ प्रथमगवस्थाद॥ ॥ कथंरग
 वन्युहायापयानदीना नोरावनीयः॥ ॥ रगवानाह॥ ॥ श्रीगीसीमग्रमः कृत्वा प्रन्यामदृष्टि
 नत्यनः॥ अश्रुकार्यसमा दायध्यायदकाग्रमानसः॥ अगुक्तायस्वररावत्वा रुदामास्मिनागपि॥ विना

३८

वार्धयूनरंदः संप्रज्ञाया मूर्धमिनः॥ मृत्पूत्रवायान धर्मः सीरागस्त्वक नारवः॥ निर्माहाय ऊन नूपयको
 कामलाग महासखः॥ अगुक्तायस्वररावर्णयूनूपसुगुणिधगुके॥ अगुक्तायस्वररावावसी नूपागुणिध
 गुके॥ यूसमानवरवे वृद्धभ्यगुक्तायस्वररावः॥ युहायात्रमिनासीयसर्वदिक्षु व्यवलिताः॥ मत्तेहमाह
 महंकार्वाकर्म्यसिद्धीधैर्यदयूनः॥ बहुनीषदास्वनूपनेत्रिननूपयदासंलिमिः॥ सिद्धात्मकाभिनी

[illegible]

यन। मनःकांक्षितमागुं सर्वकामसमूहवः॥ गच्छति गंगि वायत्नेभिः कामदिसमूहवः॥ लीकध
 तुसस्तेषु यथेव सस्ति॥ न स्य ननु विमानानि ज्ञापकं सर्वकामिनेः॥ न स्य दिव्यसिंघात्रम्यात्रुप
 धोवनमस्ति॥ न विद्यानिनसंदहायावकः स्वर्गगात्रका॥ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरका नीगादयः
 सन्तः॥ किंकनारत्नसर्वव्याधिनश्चरुमिष्टिगा॥ यथेव योगिनः सिद्धिगान्यासुगन्धेव हि

॥ नरावज्जनाकानां प्रायिना वज्जनायिगणा ॥ अथरागवत्याह ॥ ॥ कथंरागवन् दहं प्रह्लापायमा
 णाहासुरवमहदूत्यग्रं ॥ ॥ रागवानाह ॥ ॥ ललेयुक्ता स्वरावेन वाभना जीपुकीरिगा ॥ न
 सना यायाय नूयहा दक्षि (हासमवस्थिगा ॥ ललना नसनमा मर्मध्वं प्रवधूर्निधिवस्थिगा ॥ प्रवधूर्त्या
 यदावायः ॥ ३३ ॥ हासमनसीकनः ॥ मित्र ४ सन्ध ॥ यमवज्जना (ध्वं हासुीरामां कने ॥ प्रह्लापायमायमा

६०

गद्युक्तालीनारिहीहिगा ॥ दीपवज्जलनगन दाव्यग ॥ क्रमरुमी ॥ ननेवात्यग्रमशो रयीस्वलीस्वली
 प्रयागनः ॥ नमहद्वमहायागरुववस्तु स्वरावगः ॥ नमरवीयेन वद्धं स्यानिधमस्यासयागनः ॥ स
 श्रीमान् वहुनाय ॥ स्यादस्मिन्नेव दिङ्मनि ॥ ॥ गुरूपेक लोवी नारयणी वहुमता नोयगनं क
 ध्यानपटलानवमः ॥ २ ॥ अथरागवत्याह ॥ ॥ कथंरागवन् स्त्रीयमिनि केनायिजकन

३१
 साधयिगुं वलुमहाययदं ^३हो नमः ॥ ॥ राजवानाह ॥ ॥ नमः कनकद्वी ॥ ॥
 राजवस्याह ॥ ॥ किं राजवतसुखं नैदमा नमः ॥ ॥ राजवानाह ॥ न सुखो दयमाग्रे ॥
 लयन वाधि गुरुमोमा ॥ ॥ सुखविषयो दयादव प्राप्य न सावतान्यथा ॥ न च कार्यं नित्यं नैव कान ६
 धो नैव ज्ञायन ॥ कान न यः ॥ गुणानां न यानां हि कदावन ॥ सर्वा सा मवमायानी स्त्री सा मेव प्रम

४९

३२

३२
 मं २
 स्यन ॥ गामवागि कभमसो नसाईसाधि वृंगगुनि ॥ न सान्न स्त्री विद्या ॥ यं कर्तुं वासु कदावन ॥
 प्रवीयदिरुवेदुः खं मयू र्वा वन्धनं रयं ॥ स हि कस्तव मेव दीप्ती नैव नु सीत्युन ॥ यस्मादेव
 सिप्रः सर्वाः सुखे वृद्धत्वप्रापिकाः ॥ निर्वृत्ता यथा ॥ लाधुनिर्वाकामयनायन ॥ ॥ सिद्धिमेना
 ददनयेव सर्वरावन सविना ॥ स्त्री धर्म नूयनु किं वायं मिपन वापि प्रम ॥ ॥ यन नवविषा ॥ न ८

३

किं वक्तव्यमनःपत्रं ॥ नस्मात्सर्वाः सिद्धिमादव्यः सर्वथेव प्रकल्प्यन्तु ॥ मनसः कल्पिगण्यपि कावृषां
 पाषाणकादिदिशि ॥ स्त्रीणां ये वयमादेवी देवता स्त्री न तस्य हि ॥ अन्यथा न्येय रावत्पूजा वक्तव्यप्रपञ्चा
 गमः ॥ न यान्येयं पूजं दं प्रदेवता विदुः सति स्वर्ग्यं ॥ नस्मात्प्राणी कृपा विश्वामणु ली कल्पमग्रमः ॥ ४
 पव्यं मिथं न गृह्णाया ॥ न भूमिना कर्मिषु वीक्ष्य च प्र निर्यदीय धूपादिदिशि स्तुभा ॥ यथा ह्युर्व

४२

न २

तथा २

दना कर्म्यस्त्येयं स एव लभ्यते ॥ न नष्टं न गः प्रदक्षिण कर्म्यं च ह्येयं पूजा कृता रावन्तु ॥ स्त्री पूजये
 च पूजये सादरं र किंच न स ॥ कर्म्यं दर्वं विध्वं पूजा मन्थान्यं वा कं जिनेयं ॥ निन्दये च स्त्रि
 यन्नेव प्राथिनय विदुः न च ॥ वक्तव्यं मधूर्न वा र्चं दातव्यं वा नू नू यमः ॥ वन्दये प्रसर्व रावन्तम
 भादूशान वृध्वं ॥ एते नैव मिथं कायिषु त्वेदं वृद्धरा विर्गं ॥ अन्यथा त्वं कं नैव सत्सवा यी न

84

五

पृ० २

याविद्यानिसमाभिर्गुणैः॥ एतद्वायानिकथंनिर्दिष्टांरुनीहास्यभवत्॥ लोककोकृत्यनामार्थमाद्या
 दवीसुगंधसूची॥ वरुणमीनिसहस्रादित्यकायान्ःपूर्यपूनः॥ गत्वानिर्जनामीनवृद्ध
 इतिद्विपुकाशक॥ यामामानिनाकृत्यनयेवंप्रमार्थन॥ यस्मादक॥ पूनवृद्धःसिद्धिः॥ अथा
 चिनःसूची॥ वरुणप्रसमायागत्सूक्ष्मसूक्ष्मलक्षणयन॥ सूक्ष्मनवायनकाधिःसूक्ष्मनमी॥ ६

५५

विभागन॥ विभागः॥ कुप्रमप्रसूलाककोकृत्यहानय॥ प्रनयनेवर्गलाकायानिकवृद्धवि
 भयमी॥ ननननेवप्रयुक्तमाहंपादवीनृत्यनक्तिन॥ सर्वशराशिधर्मिकत्वानिन्दकप्रायिनी
 ॥ नानादिभिःक्षायदंशयैरुत्तमयनराज्या॥ निर्विददभप्रव्यापिर्वयस्त्वन्विनाभनः॥ शु
 थरुगवानीयुक्त्यायानमिगामाह॥ ॥ कोरुगवन्मायादवीसुगंधः॥ कावः॥ अथा॥ ॥

त्वर

रंगवानाह॥ ॥मायोंमादवीसूनुअहंइनुआवगनीगन॥॥चमवरंगंवैरुगवानी॥अयाप्रु
 लायनमिनामिका॥मावनपसुसिप्रःसर्वत्तदूयहोवनामना॥मदूय॥घोवयूससुसर्वनुव
 युकीरिना॥॥दिधरुवगन॥॥वेगनत्यसुयायासुगुगु॥॥अथरुगवनिहि॥॥क
 भंरुगवनुभवकादयाहिस्त्रिपदूयप्रकि॥॥रंगवानाह॥॥कामधनुस्त्रिनाःसर्व

क२

४५

खानाप्रंथवकादयः॥मासमार्गन्नज्ञानकिस्त्रिपयथकिस्त्रिदा॥संनिधानरुवयगुदूहुरीक
 कुमादिकी॥नगगार्थसमाधुनिदूतसुसमतार्थना॥अनाप्रज्ञानप्रागनप्रज्ञाहीनासुमार्जनाः
 ॥विदुन्नकूर्चनत्तमप्रायेनत्युजयिनी॥नथयगुकलोकोलेकीटिमध्यर्थकथंन॥न
 केकःसंखानसत्वाप्रुद्रामत्तयनायधः॥नया॥र्थगविनीसर्वणीयुवायुसिद्वये॥॥

मत्तं

धि

स्यचि२

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्तव्यो ब्रह्मणो भूतधेनुर्वधो यजनतः ॥ १ ॥
सर्वं कुर्वन्मास्तु कर्मणो भूतधेनुर्वधो यजनतः ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥

४५

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २१ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २२ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २९ ॥

महं

नकोऽपि हि ॥ विद्या ह वाय विद्या ह सिद्धि त्रय ह सीति न ॥ अहं ज्ञानि न हं म ए न हं वाधि ज ६
 नाय ह ॥ अहं पूष म हं पार्य गनः कर्म ह ल त्व ह ॥ अग दू ह म य सर्व मि म ह त्रय म मे व ॥ सा
 गयी स म त सा का त्रे यो गि ना न त्व यि न या ॥ ॥ अथ रग व द्या ह ॥ ॥ किं रग व न वे
 वे द त्रय ॥ ॥ रग वा द ना ह ॥ ॥ न वा य वी वि धं त्रय प थ सर्व मि रा वि न ॥ त्व या वा क क ६

४७

मिदं सर्वं जगत् स्था व न ॥ ११ ॥ अथ रग व द्या ह ॥ ॥ म न्द्रा न्म सा ध नं कृ हि म नि की यो वि र्क ६
 न्का द म मः ॥ ११ ॥ अथ रग व द्या ह ॥ ॥ म न्द्रा न्म सा ध नं कृ हि म नि की यो वि र्क ६
 ग थ ॥ व र्ध क कृ षि य या ग २ मा त्र ॥ द्वा ट ना दि क ॥ वि षं ना म वा धि ना म वि क्ति ग र व ३ दि
 रु रु न ॥ सं ग्र म वि रु य २ पि या नि तु य म थ य रु म ॥ य द नी सा ध नं वे ट र ग र्म ना दि सा

धनी॥सामर्थ्यमनकविज्ञाननिष्ठमवदप्रश॥ ॥अथरागवर्णन॥ ॥यद्युनीयसमाधि
 श्चामनुसाधनमाननशून॥यथर्मसाधयसार्द्धद॥वर्णनमकीदृद॥मूलमनुमिगिरयाननसर्वमनु
 प्रसाधक॥लिरिबनीनिबुद्धमगुनगुत्वसिहवेत्यूनः॥धनयथावयप्रसुनस्ययार्थसमूलिग॥ ४२
 स्मनगुदवाह्यमनुस्यमानाप्रानिदि॥अदमः॥नस्मात्सर्वप्रपत्तिनमनुमनस्यसाधयनू॥

३२
 अथमसिन्धुसर्वरूपमपुनवाउमसकृष्णमहात्रगदयादूहसत्वांप्रयनापिनाः॥सर्व
 व्याधयाहीनाःसर्वविग्रहादयादप्रक॥मनुत्रस्मिपुलावगः॥सर्वाभ्यसिद्धयाअरिसूखी
 रूनाः॥अथसाधनशवनि॥लक्ष्मीजयत्यूर्वसेवाकनारवग॥ननःककुपुनियेयदमान
 सपुनिदिनीगुंमंसंधीजयप्रावत्यूर्हसासंगिनाः॥सकलानागिजयसहनीपूजाकला॥

संक्षानः पुरा तियात्सूर्यादयः ॥ गंगा एवमनुः सिद्धा रुवनिगनः पुरा तिसर्वकर्मादिकनानि ॥
 अथरुगवनः साधनरुवनिपट्टरुगवनं लिखायप्रगु पूर्ववच्चतुर्धममलमध्वदणसकं ६
 यथाधिमाक्षनः ॥ गस्यागः कुरु पुनियदमानरागिर्ह ध्वसहस्रमकैकं जयन् ॥ गंगा केयूरिना
 स्त्रीयथाविश्वनः यूजं कृत्वासीध्वकालात्पुनरितिसूर्यादयः पावन् ॥ गंगारुगान्यस्यद्रुनरुनव्यं

त्वनिर्गत्वनिर्गजयन् ॥ गंगारुगवान्स्वयमेवागच्छ निगंगा र्घकस्यपादपादत्वायमित्तास्थानव्यं
 ॥ ॥ गंगारुगवानोह ॥ ॥ गंगकिं वनन्ददामिनि ॥ साधकं नवकवीवृद्धत्वमदहीनि
 ॥ गंगारुगवान्स्वयमीनेप्रविष्मनिप्रविष्मन्निद्विप्रवृत्तकीकृतिः वउशिरुक्तुयादण्डमी
 न्धनादिव्यविमानवानी ॥ गंगसहस्रायुगो गङ्गा महिमः कामनयी सर्वरुगवनूपादण्ड
 रुवेति

रुवमि॥ अथवायवर्जं रुनपादू कागुठि कायादलेयना ह्य कासहो गेभ्यर्ष विद्या धन कवित्वं पांः
याहिरुं पक्षयक्षहीनसस्यर्षधनुवादि कं प्रथमं शि मर्गं प्रार्थयितुं सर्वं शि गवान्ददामि॥ अ
थवायवर्जं नृकलुवीर्जं लिखाययि त्वापूर्ववत्साधयन्॥ अथैकलुवीर्जं यट्कक्षयनाईवः
वक्रालिगिदः॥ एतन्नायना माहवक्रायीनायलः यिभुनवक्रायकायना नागवक्राय

五

मायलं श्री श्री वक्रालिगिनालिखायधिगव्यः॥ अथवाप्रस्तानदिनकवल्लारुगवानकार्यः॥ अ
थवारुगांनं वनीयश्चनीमध्वनकाकार्यः॥ गनः आत्माननस्याः यमि नूयनध्वत्वाचेर्ववसाध
नीया॥ अथवास्वस्तिप्रदवीनूयनध्वत्वासाधये॥ सिद्धासनीवृद्धत्वमयिददामि॥ किम्यून
नयाः सिद्धिः॥ अथवाप्रत्यालीरयदखज्याणधर्नसाधयेनू॥ अथवासत्वयर्म्यकिदीखज

五

इवा

報

पाठकनाली श्री श्री कृष्ण सर्वप्रसादं साधयेत् ॥ सहजं यत्तु महानाथं सर्वपूर्ववत्सिद्धिं भवत्तु गवतः
 यदसिद्धिः ॥ अथवा वादि कृष्ण युगिमासा धनं भवत्तु कर्तव्यं ॥ अथ सर्वसाधनमनस्तदा पूज्या
 निलाहमर्प साधनं २५ काष्ठमर्प वायथारि मर्प २५ गव्यं नष्ट साध्य सर्वगन्धः सप्ताष्टौ पूर्वव
 द्वाष्टीकनाली यन्निरुहं गुणं ॥ मासाक्रमहनीम्युक्तं कृत्वा सकलीना

५१

लया २

खण्ड १

भिन्नयन् ॥ अथ नैवालिगय कविद्याधनोत्तरमिद्विषयवर्षाकृतिः ॥ अथ शिखरकुललकोषः
 आसंसारनीयश्रीकामेर्विलसति ॥ अथ वज्रयक्रिष्णलादीत्याधयन् ॥ अथ ग्रासादिमर्ष्यामीसा
 धयन् ॥ अथ यद्यप्यदूकमक्षयवीनवसुधुग्रयप्रज्ञापात्रमिनायूककनकपूषकादीत्याध
 यन् ॥ अथ यद्यप्यदूकमक्षयवीनवसुधुग्रयप्रज्ञापात्रमिनायूककनकपूषकादीत्याध
 यन् ॥ अथ यद्यप्यदूकमक्षयवीनवसुधुग्रयप्रज्ञापात्रमिनायूककनकपूषकादीत्याध

五

पृ० २

[illegible]

किर्ती ॥ मन्त्राणि सप्त दश दैव काम देवादि वनाली ॥ नाग के वन का वृष मय वास कादि नागना
गिनी ॥ २॥ अथ क का वृष मयी हा निगी सन सुन्दरी लक्ष नमि प्रिया ॥ ३॥ अथ मानटी यमिनी अन
नागिनी ही वन्द्य काना ॥ वृक्ष दूहि गावधू काम भव त्री देवनी आला किनी ननवी नादि यमि ६
ही साधयन् ॥ वट का वृष मयी श्री देवी नागान ॥ ४॥ देवदात्रु मयांति लो रुमा अणि देवी का ६

यनमाला ककुलहात्रिणी वल्लमाला नम्रा उर्वणी श्रीरुषणी नमी अवाद्यकृतागर्धसाधयन् ॥ ५
 प्रवीर्य्य वन्द्यमंगलैर्वर्धवदस्यमिभुक्कं अनेष्य नगार्हकं नुश्न नवग्रहं ॥ प्रवीर्य्य लोकोत्त
 नवजयाहिमंशुश्रीपुरुमीनवाधिसत्त्वान् ॥ प्रवीर्य्य पृथ्वीभिरिवपुरुमीमूढान्साधय
 न् ॥ प्रवीर्य्य मजनादिमादीनुरागान् ॥ प्रवीर्य्य मार्यादीनुरागान् ॥ प्रवीर्य्य वज्रकंवालादीनुरागान् ॥ प्र

५३

का

ग २

न

वीर्य्यसत्त्वान्स्त्रीयूत्रवासाधयन् ॥ सर्वश्लाकनारवनि ॥ अथकवानेनसिध्दनिगदापूर्द्धि
 नीयवान्कुर्यान् ॥ नगार्हं वरुदारुमीप्रवागमा नरुन् ॥ तथापि यन्पूर्वकं नमहदभुक्
 न् ॥ नदावामजान् नोसव्ययादना क्रम्यतावर्ज्यैरुवसिध्दनि ॥ नगुदं वरुमहा शोषगसाधनं
 मेनुविर्हणी ॥ ॥ ३ वरुमहा शोषग आगच्छ २ रुं रुट् ॥ ॥ खाजादिसिद्धौ नुश्न मूकीमसा

६

आ २

नगावसन्ध्याधिमि २

धयनिपाऊयन् ॥ पादाक्रमधनुजमुकंदनदननिपाऊयन् ॥ नृकवागवा नक्षत्रसर्वानिवक्ष
 नक्रम्यकुमान्यपिदहनि ॥ सर्वपापभनाभनिपाऊयन् ॥ नृवसर्वरूपैर्वानक्षमागुणनक्षी
 कनामि ॥ नक्षत्रक्षमाभिमिनिपाऊयन् ॥ नृवसर्वगुनक्षामावदहनि ॥ अथपुत्रलक्ष्मिबला
 हं ध्यात्वा सख्यं मुहुमायं साक्षरुनभनवानि नृमर्त्यमनुजकिन्माक्षिण्सीर्गमा
दि

५४

उभयम् ॥ सर्वं ज्ञेयसन्नि ॥ साधनकाले जाकिन्यादिकसयसात्रयनिपाऊयन् ॥ अथखटिकायां श्रुय
 कभनावद्वयप्रसूदलयमान्मर्त्यमर्त्यकृत्वासीयुटीकत्यर्कवर्षज्ञानेनवेष्टियत्वाद्यावत्सर्ववाय
 यन् ॥ बालानां नक्षीकनामि ॥ नक्षत्रक्षमावदहनि ॥ अथपुत्रलक्ष्मिबला
 लिंकां कृत्वा गन्धर्वैर्मर्त्यमर्त्यमर्त्यलिख्यनाशिकादिनायुक्षियन् ॥ ननः कलकनमूर्खी
रुदि

लघन ॥ पुनिवादिना मूर्य की लिन रवनि ॥ देवदरुस्य मूर्य की लघनि धा ॥ अथ निखन न ॥ व
वयादी की लघन ॥ गनि मागनि कृष्ण ॥ देवदरुस्य यादी की लघनि धा ॥ हृदय की लघन
॥ कार्य कृष्ण ॥ देवदरुस्य हृदय की लघनि धा ॥ मानूषासि की लक न लाह की लक ने
वा स की व क क क न वा प्रा न्य ग नैति की लघनि ना निन सखि लिना निवथान सख रुला निख

५५

नि देवदरुस्य मूर्य की लघनि धा ॥ यस्य गृह द्वात्रे निखन न न मूर्य दयनि ॥ देवदरुस्य
दयनि धा ॥ अरिम निरु म म न रु स ना द्वात्रे व क टया निः कया दूर्वादि टयनि ॥ देवद
रुस्य दयनि धा ॥ यूरु लिकी क क के निरिखनी जयन ॥ देवदरुस्य मान ॥ यनि धा
॥ ख आदिक मूर्य रु व न वा ना निज म क स रिम रु म पू दे कूर्या ॥ जय मा साद यनि ॥

मत्कार्यमदिभ्यवलिंदयारुस्यसिध्धिनि॥ पायनागमदिवाधिमपूत्रयिद्धमशरुनभन
 नाशिमन्त्रुनिजमन्त्रुदामयमार्जुयन्॥ अमूकस्यामूकनागप्रणिमाजयन्॥ सर्वव्याधि
 भांरुवनि॥ कथेवदभंशूकममार्जुयन्॥ हस्तनालूदयनदेवदरुस्यविषयं नागप्रणिमा
 प्र॥ निर्विषं कृन्तु॥ प्रववणीरुगमायतुस्वस्थानमागर्तनमंगनमूककंठशगुगोध्माः

लि२

५६

नायादप्रणिमन्त्रुदामयमार्जुयन्॥ अमूकं यवणामानप्रणिमां॥ प्रवयववेदाकर्ष
 ध्मात्वाजयेदाकर्षरुवनि॥ अमूकमांजैकर्षप्रणिमां॥ आत्मानं धनधान्यादिपत्रियूर्ह
 ध्मांजयेत्पूष्टीमकृर्वकिमां॥ पूष्टीमन्त्रुगिकादद्वयसंयुटमध्यपूर्हयदुकलुकेन
 लिखित्वापश्चमनीयेसहताम्वर्त्तुरुक्षयन्॥ सर्वहनादिनागप्रणिमां॥ चन्द्रग्रहस

त्वा२

४

म्यग्रहवासी नरुक्षे दधिरक्षे दवा पाग्र्यूनयित्वा सभर्कनक्षत्रघननसफास्वत्रथम
 प्रायनिष्ठापयित्वाष्टयैग्राक्षदिर्गकृत्वाहस्तस्यामवधूर्यगावज्जयप्रावन्मूकानरुवमि॥ नरु
 क्षयत्त २४ भगामूर्ध्वमि॥ अत्रनेवक्रमेष्टद्विगाली ७५ ग्रावनीमनःमिनीवासाधप्रद
 । कर्कशैवहस्तिसिंहमिहिल्लकेनाजनेनविशोधनः॥ धूमयिहश्रुकर्क्षीनः॥ उषायिहवली

५७

कनकाश्रुमवाजाग्रावनीकायूमयमर्केनकतागगाज्जंकात्रयन्। नरुलस ७५ अश्रुधूम
 स्त्रीकृत्यजयेदाकाशिययन॥ हनहनश्रुकभीर्घ्ववर्षीयप्रमिमाज्जयन्। दवावर्षमि॥ अष्ट
 भानकजलादूहलक्ष्मीनक्षेत्राययित्वाविसर्जयन्॥ अथमध्यववाकेमेनज्जयन्। सर्व
 भावर्षिगम्भूमिमाज्जयन्॥ ००० निसाईदण्डनकेल्यः॥ ॥ नर्वदिनीयेरुनीयेमू

लमनुयाः कल्पः ॥ प्रथममालामनु कंककीयशुक्ल ७ केतलिरिवत्वा नीलवसुसूत्राख्यामात्र
 अहलितस्य भिन्नसिवाहा केतुवायुशुक्लामय दंदत्वा वन्धप्रसूक्रोधवैजसा मूकस्य हर्षः
 नाभयमिदिकत्वा सर्वहनादिनाभयमि ॥ वन्धनकालनागिर्दीर्घवर्षादिमुखीकृत्य दग्ध
 मत्स्यमयमिदिकत्वा नाभयनमिदिकत्वा ॐ दीर्घासर्वहनादप्राप्तपुनरनुभाष्य

५८

शम्भुनायकमुसहायैः प्रदीप्तमहायमि ॥ यदिनायसत्रिव्यार्थददारगवान्कुड्मस्तो हन
 यकेनमिलयुसात्रदीकत्वा केतुमि ॥ ॐ स्रक्ताते अत्यका (तदग्रौ प्रातः ॥ नगरुडं रुव
 मि ॥ नृवं सर्वरूपप्रपठितमागुहनादीकनामि ॥ अथर्वमूलमनु की सर्वकनामि द्विगीप्र
 मालामनु स्याप्यमभवविधिः ॥ रुगीप्रमालामनु (तत्स्रष्टुयितुमश्मिन्नुदप्रातः व

दि०
नदा।रुवनि।रुक्पिपुमरिमन्नुविकालवेलायीविविकुदप्राग्मत्कार्यमभनत्सर्वसिद्धि
धनि।अथकल्यस्तुपूर्वम्।युर्ववद्विभिनाभुक्पुनियदमात्रह्येयर्हमासिमावत्युर्ववत्कु
र्मा।मालामन्नु।मयिमासहृष्टेयुर्वसवारुवनि॥द्वानाविष्णवमन्नु।मूलमन्नुवत्कल्यः
॥मभारुगवमन्नु।कल्यः।मभारुद्वीनाविष्णवस्तुमालामन्नु।रुयात्कवित्वीयातिह्यवणी

५२

दि०
धुमवस्ययुग्मा।रुक्पिपुमरिमन्नुस्यकल्यारुवनि॥अथनमानुह्यवामहृष्टतर्लिंगिगत्वा
अष्टुभर्गजयेन्।यस्यानाम्नासा।आर्चनिकामयन्॥मन्नु॥।उर्वोदत्रिअमूकीमायागुहृष्ट
ट्॥।जेनिकपारुगमालिरवार्हमोवामहृष्टनावर्षुह्याष्टुभर्गजयेन्।यस्याम्नासा।आगच्छ
नि॥सर्वयसकाहिमनिर्दकत्वायुत्रयनाउयन्निर्वाधिर्रुवनि॥मनसाकल्ययन्।

ना२

उदकं यत्रिजया रुन्धा दुधिनं भवति ॥ वर्मं यत्रिजया वग्नु एव सर्वजनपिणारुवति ॥ त
वर्षं यत्रिजया प्रस्यखा नैयानंदप्रारुं वशीकरोति ॥ एतवालत्र हूं प्रस्यगतवन्धमिज
रिमन्तु स जे रुवति ॥ अदिह्यारिमखा प्रस्यनाम्ना जयोरुमा कर्षप्रति ॥ विजत्र नामत्र
हूं प्रस्यगतवन्धमिज विजत्रा रुवति ॥ काकस्तापूत्र हूनाकाकारुवति ॥ यूनवर्कणत्र

३०

ब२

हूना यूनवर्कण रुवति ॥ स्त्रीकणत्र हूना स्त्री रुवति ॥ नृवं प्रस्यप्रस्य कणनामादित्र हूहकि
प्रणनस्यनस्येव नृययत्रिवर्कन रुवति ॥ प्रस्यनाम्ना जयोरुस्यत्र काकृष्टिः ॥ अदिमिर्वन
प्रना प्रीदृष्टा जयत्सवत्थारुवति ॥ हूं निदवीमन्तुकल्यः ॥ ॥ वलिमन्तुवलिदप्रा
सर्वयिदुवव्याधिविप्रादिणानि रुवति ॥ प्रसिन्काय समस्यत्र वलिमूयदत्र रुहस्यसि

ध्वनि॥सिन्धुव्यामनावक्षीत्रभानावसृगन्धिननावरुक्मनावरुजिणनावचतुर्वर्षरुः
लोहलिकीवपुष्पाणावागो॥इत्येतुमहावायव्यं००मीवलिङ्गद्रुज्जुमूककीर्णभ्रमसाधप्रहं
रुद्र॥००यथाशुत्रभावनतापिरिमन्त्रनिवदप्रदिविकृतस्याशिमर्गसिद्धिनि॥अथरुगव
तामन्त्रमन्त्र॥शुभ्रत्रभावनजयनकद्रुनेलनगुर्विध्मरुगतनत्रयुक्तिपगुपिवचसख

[illegible]

हा नाथ हारु सर्वमनु कल्यणटलो द्वादशमः॥ ॥ अथ रुगवत्माह ॥ स्रग्वी प्रणिता
 केन सत्त्वप्रदवदयुता ॥ यथा विकीटणी कार्या सिद्धिः केशाजुलस्यन ॥ रुगवानाह ॥ माने
 तीयादिवेदयूवद्वयस नदूषकाः ॥ नवामवधनैर्गृह्य सत्त्वस्थादिनमायनम् ॥ वलुः स
 तीदिवेसमायति यामाननैर्सर्गा रुद्रप्रसत्समी संतुष्टिवत्तमदीसमादिनः ॥ यि आया

३२

स्वयनप्रोदधिः कृदा प्रद्याननयन ॥ सिद्धमनिर्विकल्पात्मा रुयकदिंणि द्वायमाजनः ॥
 मनयनेवपायनसत्वागन्तु रुद्रधगर्भि ॥ मनननेवपायनपाजीभी द्युपुसिद्धमि ॥
 अथ रुगवती द्वेषवती रुगवत्तमभवमाह ॥ कथं रुगवन्वियत्री न सच्चरी लक्ष्म ॥ ॥
 अथ रुगवानाह ॥ ना जनेह नयने ना गवद्विदना ॥ यद्विना ॥ विषमपि विषद्विना दूय
 व

स्वात्वा

३

दधायुयागः॥निःस्वरुवजगद्वांसिद्धाहमिगिरावप्रदु॥सुउपक्षवत्सर्वप्रथाकायि
 नवेध्वम॥सर्वपायद्वर्पकृत्वाविद्यत्रीमनेवसिध्वमि॥नकेनामिसुउपक्षमाप्रागीयाजेक
 नत्यत्रः॥विद्यत्रीमसम्बन्धेसिद्धिसुस्यनविद्यम॥पायनासि नयध्वनिःस्वरुवस्व
 लवम॥लोककोकृत्यनामार्थमयानयुकटीकर्म॥ॐदानी॥
 कं

५३

दी२

३

सायिप्राप्रागित्वावनाप्रायसर्वसत्त्वार्थद्वनवा॥युकटीसम्बन्धवक्ष्यधूत्वप्रधूनायिः
 य।नवप्राप्तवर्धकूर्यान्वयत्रस्वायहात्रर्ध॥यत्रस्त्रीद्वननेवनेवरुषमृषाववः॥प्रप्र
 नेवयिवदीनालोककोकृत्यहात्रय॥युकटीमिहायदंश्रुगत्सादत्रक्षीसमात्रहंगाप्र
 दुर्कसम्बन्धप्रनत्रर्धदानीहि कथन॥नत्तमोभितःकूर्यालामकंकर्धपास्तथा।ना
 ल

नात्वेकात्रैकत्वाधायप्रदात्तदहके॥यादमान्नैयुकार्थमखलीयनथाकटो॥सचदहन
भारवजंयाभवाप्रयुधनप्रन॥मोलेप्रमृडर्णकार्ययश्चवृद्धयुगागनः॥यश्चवीनैवकर्तुं
यैस्मभूकमविरवगुप्रन॥दण॥दाईवयस्तानुगह्यवर्षासमाप्रन॥पूर्वैककुलरोद
नकलावेवयुक्तयमेन॥कलायागमलीकार्थमगुप्रन॥नित्यमशसचकद्रिश्चवेदया
रु

५४

प्रभवैवेवकषात्रकै॥कुलरोदनवेकूप्यानुवर्तुहदयमिस्तनो॥गृहीत्वास्वकुलीयुस्तीयप्र
कुलीम्यासमादिन॥स्वच्यानुसमाष्टेगृ प्रवेष्टातानासमाप्रवेद॥नत्तादिकमहावनकू
प्यादीर्वादिनिर्मिर्ग॥अथवावेगसाकूप्याद्यप्रलारः॥प्रवर्तुर्ग॥विद्वत्तयश्चसमयाकुल
यश्चपुणेदनः॥पूर्वैकैवेवमागनद्विष्टीद्विष्टसमाप्रवेद॥सिध्दमसर्वथाप्रागीनागुका

व२

प्रा

म्वं

म्याविवात्रधन॥युहापायसमायागन्तरवीदयानुबोधन।युम्भतार्त्तिगत(केवसर्वस्वी)।
कमव॥दानयालेमिनायूक्त।रुवस्थवनसीमप्रशानत्यनकायवाविहंसवर्गग।रहोखानः
॥लीलयालेमिनासुयासहगपुनरवाहन।युद्धनीपी।उन(केवदानियात्रमिनालिप्य)।सा
दनीदीर्घकालेकुनेपु।रुयासमाहितः।वीर्यायात्रमिनासुमानसुविहंसुपात्रनाह॥सर्व

श्रि२

३५

वेमाहावनूयधधामनामिनामना॥ध्मात्रेयात्रमि॥म्रीनूयरावनायुहायात्रमिनायुकी
हिना॥सूत्रनकमासोगमावेद्ययूक्त।वृंवेवद्यात्रमिनारुवन।यश्चयात्रमिनायूध्रीहान
पुहुमिकथन॥सूत्रयागसमायुक्तायागीसंरात्रसीरुतःसिध्दमदधमागुजायूधसुनस
मन्विनः॥यथालगामरुहर्गदुलपूषासमन्विनिनी॥नृकदधमवसीवाधिःसीरात्रप्रमसं

रुगा॥ सगुणादनाहमी॥ ॐ हव हव न संभयः॥ हृमिस्तु मुदिता रुपा विमला वर्तिका नीलथा॥
पुलाकनी सुदूर्जया हिंमूखा दूत्रेणमावला॥ साधूमती धर्ममद्या सा समकयुक्तानथा॥ निवृ
यमासनवती सर्वगुणादनाहमी॥ ॐ हव हव न संभयः॥ ॐ हव हव न संभयः॥ ॐ हव हव न संभयः॥
यटलस्तु गुणादनाहमी॥ ॥ अथ नमो न्यैर्वदिस्तम नुरुद्रा नाम वज्रपाणी रुगावक भगवता

ॐ

वन्तु॥ यत्रियुक्तामादनाथ किमर्थमवलसीरुकी॥ नृकल्लवी न संभयः॥ ववधुमहा नावधेनि॥ अ
थरुगवानाह॥ ॥ युक्तीयापसमायाजनिष्ठ नृसूख नृयिणी॥ युक्तीयापसमकनञ्जविनाज
ननामयालिनी॥ ननेवावलमाख्यातवज्रसत्त्वत्वा नृयिणी॥ द्विपुङ्गेकमूर्वीणा नीलचक्रमयुनि
धर्मनशाख रुपा भक्तनाथानुपुष्टालिगधनत्यन सत्त्वयर्ष हमासी नीयपवन्दु नविस्ति

न॥ आसीसा नक्षत्राणि विष्टु दिव्य भोक्ता नसीहृत् । न नदमयत्नी रखादी सर्ववृद्धे सुखविनी ॥ अथ
 लम्बेयुगा विज्ञासर्वे नैर्ध्विका जिना ॥ सत्त्वार्थ दिक्पूर्व किमावदी हृन्सर्व ॥ ॥ अथ सम
 नुरडा वाय ॥ अकात्र धा किमा रखादी वकात्र धा किमयुक्त । लकात्र धा किमयुक्त कीदृशीता
 मसंग्रह ॥ रगवानाह ॥ ॥ अकात्र धा कश्चिद्मसह जस्वरा वमित्युक्ती । वकात्र धा नद

६७

कर
 यत्र मानन्द विनमानन्द सहजानन्दारब्धे वदुना नदस्य रावमूर्क । लकात्र धा ललना लालिनी
 सत्रनेमूर्क ॥ अकात्र धा यत्र युक्ता । वकात्र धा यूप्याय के शायुषा यो कथा गेधालकात्र ४
 सखलक्षणा ॥ सत्रवेक लक्ष्मी नसु नुक नुकलक्ष्मी कः स्रगः । विनागमर्दनादी २४ रखा नत्र
 कलक्ष्मी नक ॥ वक्तु स्त्री र्म्यवला देवमागी वृद्धा नसी भाग ११ ॥ एवमप्रवायत्नी ध्यायात्वीगः

न१

यु

証

५१

कुसुमपटः कृष्णविनागः विनागः ॥ अथ मृदुमायागी प्रहामालिङ्गनिर्हन्त्री विनागस
र्वनासत्ता वृद्धसिद्धिमवाप्नुते ॥ ॐ ह्येकं लब्ध्वा नाशोऽपि न भवति ॥ यत्नमात्रेण च य
पटलमथ मुदणमः ॥ ॥ अथ रुगवती द्वयवक्रवाय ॥ नृकवीनः कथं सिद्धिं कुरुहि
त्वं यत्नमात्रेण ॥ अथ रुगवतीनाह ॥ ॥ मृदुलिकाकायनागः कृष्णवर्णविनागवर्णः ॥ गतः

६२

हे नमो यत्नमात्रेण अशास्त्रं ॥ अथ मृदुमायागी प्रहामालिङ्गनिर्हन्त्री विनागस
र्वनासत्ता वृद्धसिद्धिमवाप्नुते ॥ ॐ ह्येकं लब्ध्वा नाशोऽपि न भवति ॥ यत्नमात्रेण च य
पटलमथ मुदणमः ॥ ॥ अथ रुगवती द्वयवक्रवाय ॥ नृकवीनः कथं सिद्धिं कुरुहि
त्वं यत्नमात्रेण ॥ अथ रुगवतीनाह ॥ ॥ मृदुलिकाकायनागः कृष्णवर्णविनागवर्णः ॥ गतः

दीर्घा॥ कृमि मल विच्छिन्नाः॥ ॥ रावता विच्छिन्नाः॥ यथार्थं यथा यथा सारं विच्छिन्नाः॥
 भिष्यं कर्म भुज्याना हान सारं विच्छिन्नाः॥ स्वच्छं दत्तं॥ न गच्छेत्तद्वदः॥ कृता गच्छेत्तद्वदः॥
 नैव द्रष्टव्यं॥ यथा प्रपानिः॥ तद्वत् सारं भुज्याना हान सारं विच्छिन्नाः॥ कृमि मल विच्छिन्नाः॥
 हं॥ यथा प्रपानिः॥ तद्वत् सारं भुज्याना हान सारं विच्छिन्नाः॥ कृमि मल विच्छिन्नाः॥

मयं नृनां गच्छामहे नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यत्किंचिदपि कुरुष्व
 माहुर्यहं ह्यहं जन्मान् कुरुष्व माहुर्यहं ह्यहं जन्मान् कुरुष्व ॥
 यत्किंचिदपि कुरुष्व माहुर्यहं ह्यहं जन्मान् कुरुष्व ॥ यत्किंचिदपि कुरुष्व
 माहुर्यहं ह्यहं जन्मान् कुरुष्व माहुर्यहं ह्यहं जन्मान् कुरुष्व ॥

٥٩

नाथूद कुण्ड

ገላትያውን ማዕከል ያለው የፊደል አባጽጦች

प्रवर्जितः ॥ अस्मा यथैतन्मयं दशसिद्धिः ॥ यस्मादात्रमिनात्रैका यथैतन्मयं दशसिद्धिः ॥ ॐ
त्येकल्लवीनार्या श्रीवैकुण्ठमहात्राय दशमस्तु विष्णुद्विपटलः यथैतन्मयः ॥ ॥ अथ रत्नगव
त्पाद ॥ कथमस्य प्रकलोकः कथं गान्धिसर्पयूनः कथं वासीरवसिद्धिर्कृत्स्नियनमप्य
नः ॥ अथ रत्नगवत्पाद ॥ अथ विद्याप्रणयः संस्काराः संस्कारप्रणयविज्ञानं विज्ञान

७२

७४

सर्वदाकर्तव्यं नृपं विदुषा दीराकारं रत्नगवतीत्यर्थः तस्मात्संस्कारेण वनि ॥ सर्वगुवि
धः ननु कायसंस्कार आत्मासंयुक्त्या सो वाक्यं विदुः ॥ कुविदारौ मन्त्रः संस्कारो नाग
द्वेषप्राज्ञाः ॥ नृशिर्पूजा ॥ सुविद्याया सति पुण्यसक्ति विनर्कयमिस्तुलंगत्तुनिकि वि
वात्रमगिष्ठं संगत्तुनिकि ॥ अनूतूकं रवमिद्विष्टासुव्यय ॥ तस्माद्विज्ञानं रव



५२ अं

[illegible]

नो २

विज्ञाननिग्रोधनामनृपनिर्धनोः नामनृपनिग्रोधनत्वजगत्तननिग्रोधः वजगत्तननिः
नात्वे धास्यर्धनिधः स्यर्धनिधो नो द्वदनानिग्रोधः वेदनानिग्रोधः रुषानिग्रोधः रुषा
निग्रोधदूयादाननिग्रोधः रुषादाननिग्रोधवनिग्रोधः रुवनिग्रोधज्ञाननिग्रोधः नि ७३
ज्ञाननिग्रोधज्ञानमनृपनिर्धनोः स्वदोर्मनस्यायासातिनृधनं ॥ नृवमस्य

धर

मा

मनीष्यर्थः नामनृपनिर्धनोः स्वदोर्मनस्यायासातिनृधनं ॥ नृवमस्य
नृपनिर्धनोः स्वदोर्मनस्यायासातिनृधनं ॥ नृवमस्य
नृपनिर्धनोः स्वदोर्मनस्यायासातिनृधनं ॥ नृवमस्य
नृपनिर्धनोः स्वदोर्मनस्यायासातिनृधनं ॥ नृवमस्य

रि

तनाति। बहूः। अग्न्यादि। काकापसनांति। नृसिमुकः पूर्ववत्सम्भ। नीत्यादि॥ मरुता
 स्यर्गः नृपञ्चदशं धनं सत्यं धर्मं धानुसमायत्तः॥ मरुः शृङ्गसूयादिलावः। मनुष्य
 पादानं नृत्यापकं कर्मः। मरुः शृङ्गवर्धपुत्रः। मनीषा मिषुकटी कत्रदा हि निष्यत्तिः।
 उवादानं यं वस्त्रं भूषणम्॥ मनीषा मूनाज्जननी लावः। सनद्युविह निरोधः। मनीः
 मनीमन्तः। शिवक मरुः। मनीका कर्मः। मनी॥ मनी किर्म मनी पथ्या विमय त्रिद वने। व्याः

७३
२

दि२

कवलस्य मरुतादूः श्वस्त्रं धनं नित्रा। धनं वनि। प्रार्थित्य प्रमेलार्कः पुनीत्येव नित्रुध
 न। वृद्धं नृपद्वयं लब्धसिद्धिनि॥ अथ शृङ्गवत्सुवाये॥ ॥ कथममरुगवानविश्रांतिवदनी॥
 अमरुगवानाह॥ श्रियनिवर्तुमिदं वक्रं मनीनादिपुरुदन्तः। द्वादशका नमस्वामिं धर्मि
 *थ सर्वत्रिनेत्रि॥ मनीविश्रांतिमायादया स्नानं मरुता कर्तव्यं नृप्यं विहं। नीनाका

[illegible][illegible]

स्वात्राः सामान्यविष्णवावस्थाग्रहिणः विरुद्धे विस्मयानि पूर्विका भवन् नृपकुलना
त्मकं ॥ पृथिवीगुणत्वं वाक्कटत्वं आग्नेयत्वं गगिष्यन्दिनत्वं नडासुत्वं यनियावत्त्वं
त्वं पापनाकत्वं नृपुमानलघुसमूदीनक्षत्रं ॥ नस्मात्त्वजामनानि वहुः ॥ अग्न्या
द्यजिद्राकणमनानि ॥ अग्निर्भूतः पूर्ववत्तर्धगीत्यादि ॥ नस्मात्त्वर्धः नृपभादनस

७५

स्यर्धधर्मधनुसमापरुषः ॥ ननः सुखसुखारिलावः ननायादानं वनः प्रायकं कर्मनना
रवागर्हयुवणः ननाऊगिषु कटीकनक्षत्रिनिस्पहिः ॥ ज्यादानं यक्षस्तन्धलाहः न
नाऊनायुनामनीलावः ॥ मन्त्राविरुद्धे रुनिनाधः ननाऊनामनः ॥ विनकप्रनः ॥ का
कुलावति मृकिर्मपानवर्धयिगनियनिदवना व्याध्यायुयद्रुगधदः श्वीरुवनि

नदर्वयूनः पूनर्मनसि पात्रय दोर्मनस्यीरुवमि. दूर्मनाञ्चयिकतायूयद्रुतउयापासी
 रुवमि. अयमर्थः. अविश्रादिषु जायतनयम्य कताकता रुवसत्वे. अकरोवसि नस्तेलो
 कययमन्. ययमिस्तीयू नूयाननूनकानू. ॥ नमः. नीमजागिक कर्मभापुत्रिगायज्ञो
 नावूत्यनोरविश्रादि. अयमिस्तीयू नूयोननोदृष्टातीवमस्यनमः. स्याजित्ययमं. ॥ ननु

७६

न२

यदि यूनूयारुविश्रादि. नदामानीयूनूयाकाययमि. लविमाननियनयूनूयारुवमि. ल
 विपिननिवमहायदिषु. नागद्वयोयसूरवदुःखवदनेः नमः. कताकात्रे. नानयासाईन
 निकत्रामीनितिक्रयन. दुःखासूखावदननयायाम्. एधारुवमि. नमः. पूर्वकर्मवागयु
 निगामहाहकृपा. नूननर्मामीनिकृत्वा. कथनकाहियूनूयाममस्तीयकासयनयूनि

क. जो. ता. ना. स. क. म. ध. व. रु. वि. धि. रु. मि. ना. मा. (र्ग. ध. पु. वि. ध. न. स. ध. पु. क. धि. धि. न. दि. रु. म. धि.)
 कृ. य. रा. वि. मा. न. न. का. म. म. ना. मा. त्मा. नी. य. ध. मि. स. र. व. का. न. ध. म. या. द. दा. मि. न. न. : भु. क. ध. स. म.
 त्र. सी. रु. य. म. दा. ना. ग. न. ना. (रा. ध. व. ती. ना. धा. धि. कु. र्व. जा. नि. ग. रा. मा. नु. ४. य. पु. ध. धि. धि. न. स.
 व. ज. ध. धी. भु. नी. ना. धा. क. र. न. न. ना. धा. सि. न. : दि. ने. ध. न. क. वि. न. व. रु. मा. रु. व. रु. व. मि. स. व. ध.

धू. पा. २

सू. नी. २

पु. मा. र. धा.

मा. १

क्र. मे. कृ. म. ध. क. ल. ला. र्व. द. ध. न. ध. नी. मा. र. वा. पु. ना. न. व. रि. द. धा. रि. व. धि. धि. धि. ने. व. मा. (र्ग. ध. पु. वि. ध. रु. स.
 ने. व. मा. (र्ग. ध. नि. र्ज. ना. जा. मि. र्व. मि. प. दि. वा. सु. रु. वि. धा. मि. न. दा. रा. वि. धि. न. र्प. न. ना. (ग. रु. व. मि.)
 रा. वि. मा. न. नि. व. द्वि. य. ४. न. न. : आ. त्मा. नी. सु. प्र. य. य. ध. मि. रा. वि. मा. रु. मि. ना. मा. (र्ग. ध. पु. वि. ध. य. ध.
 य. मि. त्वा. ध. पु. क. ध. मि. धि. रु. य. न. स्या. न. वे. ज. न. मा. धा. मि. व. मि. न. न. : पूर्व. व. नि. र्ज. कु. मि. ना. य. न. न. ध.

देवमविद्यादिशिर्वाकाजामकलाकाभ्ययस्त्वन्धनवन्द्यदुःखसंसानिधः यथैस्त्वन्धः
। नवदुःखनकार्यप्रसिद्धाकार्थिनी ॥ अविद्यादिनिग्राह्यास्त्वन्धनवन्द्यदुःखसंसानिधः
रावः । भुक्त्यानाकुंठना । नवदुःखनकार्यप्रसिद्धाकार्थिनः । नृणां नृणां वा प्रादुर्भावा राव
ः । नृणां प्रादुर्भावा रावविना हि नृणां पुद्गलाया यथैयूटं महासूखनूयिषी । श्रीमदवलता आत्मकं यः

७२

दुना नन्दकमूर्तिविद्भवनिर्वाणप्रतिष्ठितामाहुः ॥ नाथा (ध्यात्यग्रकलाका) नागहृत्प्राह
मंगलः । अथ लार्थयनिस्त्वा नाद्वैतसिद्धिसमन्वितः । नवलनियुक्तासंज्ञा सूखनसमप्रदि
नं नुयत्रिहं । विधूतचित्रमसमावीतदवलसीहृत्प्रायकथिनं ॥ ७३ ॥ एकजिह्वी नाखिणी
वधुमहानामधनकृष्णसूयादयटलः शोभनः ॥ ॥ अथरुणवलाह ॥

नाथदीर्घपूटं शुक्रनकलिंगरुगसुने। पुवद्वभक्तनकडं व्याधिव इत्तनाभनान्॥
 मनावभयनारुवा रुद्र द्याकशेनेदयि। शुक्रस्यसुम्नाइक जाव द्याकहिधागेकी॥
 अथरुगवर्त्ताह॥ ॥ साधुसाधुक नंदविप्रदहमध्विगस्त्या॥ वदुनानाविधं
 नवे ॥ १२ ॥ लोकाथसिद्धयभनीनभधमदादोयभक्तिसमात्ररुन्। शुक्रवस्तुक्

७२

केंदंवरु ॥ १३ ॥ लोकाथसिद्धयभनीनभधमदादोयभक्तिसमात्ररुन्। शुक्रवस्तुक्
 शुठ्ठ्याना कृष्णजीर्ण पुत्तभनेम्॥ केंदकाभयनसीनेली पिवन्नेव शसीपूर्ण। नोद्रेप्रमक्ष
 या। गनरुवेन्नेवनस्यनासेनी॥ हिनेभावीनसीकिश्चिसेन्नेवनवसीपूर्ण। कृपाया ॥ २४
 स्थिर्गिक्त्वा रावत्पिरुस्यनाभन॥ केंदकाभयनसीनेली कूचमूर्त्तवल्गमयः। यानमा

रुष

^{रुद्रा}
 मरुवरेलं नाभनवनसंभयः॥ नसं कर्माणां मरुः ^{रुद्रा} यि वल्लवधसंभयः। नृणां
 मरुवद्वन्यां मरुः नमधूनभयः॥ नृकैर्कदिदिन कर्मात्त्य नमधूनभयः। नृकैर्कदिदिन कर्मात्त्य
 नृकैर्कदिदिन कर्मात्त्य नमधूनभयः॥ नृकैर्कदिदिन कर्मात्त्य नमधूनभयः॥ नृकैर्कदिदिन कर्मात्त्य
 नृकैर्कदिदिन कर्मात्त्य नमधूनभयः॥ नृकैर्कदिदिन कर्मात्त्य नमधूनभयः॥ नृकैर्कदिदिन कर्मात्त्य

२०

^म ^{नि}
 ॥ इत्येवमहाभयः नृदं दिव्यामर्गमकूटं रुद्रः॥ मरुटिर्गनां केलयः नवनीदं वायिमाहिवा
 वास्यमरुटिर्गनां केलयः नवनीदं वायिमाहिवा वास्यमरुटिर्गनां केलयः नवनीदं वायिमाहिवा
 वास्यमरुटिर्गनां केलयः नवनीदं वायिमाहिवा वास्यमरुटिर्गनां केलयः नवनीदं वायिमाहिवा
 वास्यमरुटिर्गनां केलयः नवनीदं वायिमाहिवा वास्यमरुटिर्गनां केलयः नवनीदं वायिमाहिवा

प

नृ२

विमर्दिमवर्द्धन्मृत्तिनीकाथनस्यगः॥८७॥ नमस्यवयाञ्जुधगन्धवहनीकर्मः॥ क
 ल्कः॥ समर्द्धमन्त्रिगस्तनकर्द्धववर्द्धन॥ वात्रद्यपियथली॥ अनायनाडिमाकर्मसभा
 । माहिमोवात्रवनीमनसर्द्धनालिजवर्द्धननं॥ सवालकद्वनादिदीमादिवानवनी
 ननमर्द्धनालिजवर्द्धन॥ धूसरस्त्रसनाञ्जुधगन्धमर्द्धपिष्णुमादिवानवनीममिह

८१

विमर्द्धनालिजवर्द्धन॥ अनायनाडिमाकर्मसभा । माहिमोवात्रवनीमनसर्द्धनालिजवर्द्धननं॥ सवालकद्वनादिदीमादिवानवनी
 ननमर्द्धनालिजवर्द्धन॥ धूसरस्त्रसनाञ्जुधगन्धमर्द्धपिष्णुमादिवानवनीममिह

व

^४ निम्बत्वकैका (थरगयुक्षलन) निम्बत्ववाधूपमर्द्धसो कूमात्रसगन्धिसूरागदिगु (धमय
 गैरुवमि) ॥ ह त्रिनालरागः पयै किंशुकक्षेत्रराजो कं पवक्षेत्रराजो कं कदलीक्ष
 लराजो कं जलेनयी द्वा लेपमागुधरागकदलिंगनी त्रामनाथनी ॥ ननाहालाहलसर्प
 चवूर्धनिभिर्न कदलनीसकाहसायिनी ननलिंगादिकं सुदमेन नयूनः कंभः पादू

८२

^{रस} ^{मि}
 र्वैति ॥ माहिवेष्टकजहलिककैर स्वदनेलाणीमईनादीनी वृद्धिः ॥ जानापूर्वतिलनयिषु
 रागमूदरुगदृष्टिसिगैरवमि ॥ माहिवनवतीनववीकूटबाला नागवला रिर्मदनासन
 वृद्धिः ॥ नफादकक्षालेनाद्विर्मलिंगसदृष्टैरवमि ॥ द (धु) तिलमूल गवाद्युन
 यिवनू ॥ अगु कालगर्हिदीरवमि ॥ अथगन्धमूलद्युनयिवहैरिदीरवमि ॥ बलाश्व
^३

सं
गितलासिदणकनागिलीमादिकमधूयूकपिवजर्हिदीरुवति॥वालाभूलंजदकनयिष्ठा
पिवडकवाहीनाणयति॥यवयूकलामुष्टमर्जुनसंजहिमधूयूकनादरुनासर्वगर्गुरद
रुवति॥बनादक्रानामूलजगुकासवेरुवन्धनाजर्हिदीरुवति॥कलम्बीधमर्कुरु
यकुरुवतिः॥मन्त्रुनदधिरुदधनणुक्रवृद्धिः॥गुकाणमिगरुदधमक्रवृद्धिः॥५

[illegible]

नसयलेकं वाक्वीवूर्ध्वकर्षेकीयिवन्यागर्ज्जुकिंहीलराजनमासनतयः॥ वाक्
वीवूर्ध्वकर्षेकीं नकेशजलनकींकिंकेनदूग्धनवायिवरुषसासनतयवाक्पुनः॥ यः
कुनीवूर्ध्वघननरुद्रपुत्रिसकादनद्विप्रवर्षाकमिः॥ सनवीजवूर्ध्वपुत्रेकीं नक
सासिपलेकं नकवर्ध्वगवीहीप्रधमनावद्वप्रननन्यप्रत्युधर्ममनावधर्मकींरुपनीत्वा

五

सनादिकं तदुदत्तवयवैरुपारुणैः। जीर्णदूग्धनराज्यमन्वानावयवार्कितः॥ सफाहं गु
प्रयावप्रथाक्रियागत्थारुनक्रियाः। गतः कथमदमः यदतिक्रियन्तूरैरिष्टुक्ति। गमाव
लियलिननहिना जीवनिषणानियक्ष॥ नकावटमूलैर्घनमधूनाविशलयदमागुंरु
परुथेवरुली॥ श्रमकीरुनीनकीरुंजनाज्पियली मनीयलाहवूर्हानि। मधूणर्क

ने
पु
द
पु
का
प
प
प

१ कंठकं मधुनां जयं सर्वं वदुः शो ग ना मः ॥ कांठिकं नैलं से नु वं दुर्वा मूलं व का स्य निघृष्टा ३३५ वदुः
सर्वं वदुः शो ग ना मः ॥ मधुयिष्या ल्या वा ऊ प्र म् ॥ क र्ण गृथं मधुना ऊ प्र द्रा ल्य न्ध ना म भां धा म ह
लं घ्रा त्वा कं का मूलं न धु ला द कं न यि व नु नो सि का पा न द घां घा ना सि क पा न कं न भु व नि ॥ ७८
ला लि का मूलं व व क्षा न ल भु धी वि न भ्य नि ॥ गु ऊ मूलं न द न की ट वि ना म ॥ ७९ ग घ र्णः
ग व द गृथं कं कं ट व द प य त्या द सु द क्षा द न क ट क टी न भ्य ॥ मूल क वी र्जं पि पं गु न क व
॥ ८० ॥ अ न कं क रं द रं न सं म न पि न भ्य द श ॥ ८१ क पा न कं ति न भु व नि ॥ कां ठा द मूलं मूलं न भु

वदुः
शो
ग
ना
मः
॥
७८
७९
८०
८१

ना २

दनी कृषं पिप्रा व र्ण ना म कं घा दि वि न भ्य नि ॥ द नि ध मा र्ण भु र्क का ग दी न भु यि व त्थ ल
म कं कृ म शो ग ना म ॥ मा हि ष्य द धि र क रं क ना द नि सा न ना म ॥ आ म्भ र क्का स र्क थ ॥ क
ट क व क ल रा ग द र्म म नी व गृ ७ भु धी ना म क र्ण गं ग व न कं ध यि व नु ॥ गृ ह धी ना म ॥
अ मं की पि य्या ली वि नु क र्म र्द कं पू ना न न गृ ७ ध र्ण म धू स र्म र्ण प्र नु ॥ वि का ल का म ॥
ले

मथा २

नमः

ॐ

सविनामनी ॥ हनीनकी वृत्तं मधुनामथाखदिनी गकनयवपावागुं रुद्रयम. कृदिना
गनामः स्यात् ॥ आकारकजीत्रकयदध्राम (कुनवायि वल्लवधसदिनं मृदु ककु विनामनी
॥ मर्क नापव हानी सम वा रुद्रयम ॥ सोही जनमूलं काथ वायि वदस्तनी यदनि ॥ हनि
नदी ॥ उगु कर्म ईकं वमसु नायि वेत्या हनामनी ॥ जीत्रकं गुठन रुद्रयम ॥ हनावा

६७

मथा २ पु १

संभव

मानसि स्यात् ॥ पवे हानी दध्राम वायि वदस्तनी नाम ॥ कदुगुयं विउड्डं दनाम एकावृत्तं
यिवदाग्निर्दायानि. किमप्रावितस्य नि ॥ हनीनकी गुठन रुद्रय ई नामा वितनम्य नि ॥ ह
नीनकी गुच्छा रुद्रय दामवा ननाम ॥ हवीदिनि डयायि कृत्स्नया त्क हूनाम ॥ अनीने
वददु विस्फोट ककू नडिं प्रोष्टाद्यानादि कनाम प्र ॥ कामममईक मूलं कीडिकेनयि

हलं
 कृत्ये गुं क दू गेल नयिवनू ॥ असावित भूमि ॥ अरुन त्वं यदु नादि नारु द्य प्रद
 प्रव्यथ नाभ ॥ विस्व दग्ध गुं नरु द्य प्रद की सा न नाभः ॥ मातुली गले सं गुं नयिवनू
 भूल न भूमि ॥ गुं भुं नो दया सर्व ॥ लक्ष्म नाभः ॥ कट कं मधू ना अरु प्र सर्व दि ना
 ग नाभः ॥ काजिकी वेली से न व दू वा भूल व का न नि पृथ्वा अरु ना र्व हूः भूल नाभ ॥ गुं

रु

उं घृत नरु द्य दान यि ह ॥ लक्ष्म कृ द्या दया वित सं मि ॥ गिरुला वृं घृत मधू ना रु द्य प्र स
 र्व ना ग नाभः ॥ हनी गकी वृं घृत मधू ना रं दं यं विकाले अं लि ह दान ॥ लक्ष्म वि ना भनी ॥
 वास क र्प यं गी व वा वृक्षी यिं यि यली य भु वृं क ल्य से न्ध वी न मधू ना व वटी दू य र्हि
 नारु द्य दान ॥ लक्ष्मा वित भूमि ॥ सुख र्व मधू र्व रव मि ॥ वृं क्री व वा न्द ॥ यि य ६

क

लीहनीरकीवासकैखदिनश्रमधूनागुटिकीकृत्वारुद्रप्ररु(थेवर्ली॥यमानीभुठीहनी
 नकीसेन्धवान्समाहृद्रयसर्वाजीहृतामः॥गुदूवीनसमधूनायिवेत्युमहना॥समासह
 मेकन॥दग्धमियलीवृहृद्यनमधृदिःयिवनूनहडागकाभदयानभधकि॥लज्ञा
 लभनयूरुधामूलमंजाभादकनयिबुलपयक्रुद्वीमूलरुद्रयन्नामं॥गुंरुलांनैलि

८८

नं
 ॥जीवना॥

भुष्टीलापेशानरुद्रयद्रुंरुवमि॥द्रयकावीजमनीवनयिवदिनगुपीयायनागंमः
 ॥गुंरुलांनैलिकाकृष्टमृष्टिकाएजगजकैसहकागोसुवीजलाहयूरुकायिकैकनृदि
 मारिहनागुगुलूनकैगंधूयपित्तानमईयरुनःसकाहैवधुस्ययप्रकभनंजन॥म
 पूनयिहृहंगनाजनसात्यांगवापेंधृमंयकानभधदधंयासकाहैकभनंजन॥यू
 न

मनंकुर्षा२ क२

^(३५)
 नववधुयाः काथी कुर्यान्त्या उभयगुणान्नरुल्लसत्तु कौस्तुभप्रदः ॥ तैमिरिना ॥ ७४ ॥
 शूर्यवर्धनद्वारा नरैल्लभना वभक्तवन्ध्यान् । अतनभार्यगार्कभनरुन ॥ ७५ ॥ मित्रिज
 त्रीष्टिकद्वगन्धकैसमयूर्ध्वकृत्यवर्धिका मध्वकृत्वा नलदधाम्पुखवर्धिका कर्मधकद्व
 नैल्लगद्वसुनगर्विन्दुद्वयमयान ॥ ७६ ॥ वलियनिर्गनस्यति ॥ ननमर्दिननसनकूपूलपाद्या
 न

नात्यक्त २ बालकामहिनन २ २२ २२
 दिनिर्गवनि ॥ सशानवनी नमर्दिनगन्धकमासकसहिर्गनसलैना कौमिलिशीर्लक्षि
 पश्यामि ॥ ७७ ॥ नद्यत्यक्त २ नमूषिकापिदिननैवद्विदार्नननसवन्ध्वंरुसंत्क्यदिना ७४ ॥
 ॥ गवत्सस्यपुथमविषीगृहीतागुटिका नप्रतिष्ठगगनमूलयिषूववसूयन ॥
 नृकागुलिकीरुद्वमित्वाविषीरुद्वन्नपुखवनि ॥ ७८ ॥ नमूवीजंवीजंयूनीवीजं ॥ ७९ ॥ नीववी
 पुनका

रुक्मवर्धयित्वा शोकी नद्ययापसंघन्धयद्युत नुरुहयत्यरुक्मयावद्वपुःकरवनि॥ अ
 मलकी कूषमूल्यलमासीवलानुषांलयनविवलोकभांघना ४ स्यः॥ कूक्मवदकमकुरु
 मनेदग्धमधयनान्निर्गकत्वा मरुदमन॥ दुर्जनश्रुयिके भांघिभुक्ति॥ नागिक
 लेकसेवनश्रुयिके मिययकधीसायमितो सैनसैन भुक्तदद्यात्पूत्रववाधिर्नम
 लि२

२१

१ रुक्मनात्रं विष्णुपुत्रं यममभा॥

निर्वृत्तकर्मस्य मोक्षाय श्री यक्षमहा नायककुरुवाधिवद्वत्तनियटला १ रुक्ममः॥
 ॥ अथ रुक्मनाह ॥ अथ गाय नात्रिनामूलं भुक्तं वटिकां कृत्वा मिलकेन वणी रुवनि
 स्त्री॥ वृक्षदक्षीव वा कूषं मधुना लिङ्गमूदयति यका मयद्वभमानमां॥ दक्षायला मूलं
 कूषं गाम्बूलनदद्यात् रुक्मवृक्षदक्षीविदं गश्च व वा कूषं नागकेशं न गाम्बूलनदद्यात्

२ आरवित्रका लेनगु या विद्वान्मित्रो
लं २५ ५५ वरिकां कुलोश्च यथि

भीरुवति ॥ गार्दरभुं कं कमलकमत्रियिषु इल्लिषा कामग द्वभीरुवति ॥ अर्धनिधिभुं
लो जू दू लो नो यना सूर्य उकृष्टमनरा वा निलकं नवणी कनर्ध ॥ रं गरा उमलमात्म
कृत्त उरुना रु ॥ ७५ दकनवीनलनी ककना भनक नमुदयनभमभान धूमन धूपयि
ला विमुनि ॥ ७५ दभी सुवति ॥ मयत्र भिरवा का कजि द्वा मरु स्यानिर्माली ७५ कवूर्ध पस्या
कु

२२

लं ७५ क हरिता लवितन ७५ क कवि द्वा मरु स्यानिर्माली ७५ क कवि द्वा मरु स्यानिर्माली ७५
ः भि नो सी मरु सावनी रुवति ॥ विद्वकना मूलनेली गलि प्वा नम धारु था ॥ य व्वा नरु
धधु सुत्र सारु सी संगरु द ७५ मरु नरु द शव कल हस्त न यर्ध विद्वकना मूलनेली ७५
समराग वूर्ध मधु नावटिका कृष्ण कर्प्य गव ध्वा ७५ मयत्र ॥ न म्चूलन द द्वा मरु सी रु
वूर्ध नवणी कनर्ध ॥ उमरु कृ कृ नेदु दि द्वा मरु सी रु ७५ मयत्र क दी न ध मरु सी रु ७५
दी

अमृकी आया चिदि साग कृ नि ॥ निर्दूमा (उमे ना पधम् ॥ मयूत्र भिखा यर्थ मेलन खाता
 दोद द्रादु (भा रुव नि ॥ अय त्रा जिता मूलै यूषा उत्थाद्य के र्य दामुं हन तरे लेन नया लेक ऊ
 लियाम य रूपा उता सीयू नूषी वभी क रा नि ॥ द (धु त्त्य लमूलै यर्थ मेलन द्रादु भामान ॥ ८३
 य नि ॥ विउं गं त ग न रू म दि त्र पा द द्रा द नि छी ना भय नि ॥ मनः भिना ना ग क भ न वू

कृषि मं गु (य मय तारि ना हि म ऊ य द्वा भी क न र्दी ॥ क रू त्री ले धू स त्र क स ह द वा रिः
 क रू निल क रू ले र्क व भामान य नि ॥ उं व ल विरू विलि २ वूल २ य न मूं व २ स्वा ता ॥ स्व
 लिंग स्था प त्रि न क क न वी त क स मी सं स्था य स ह सु म कं ऊ य न्ता म वि द र्हि न न प्र स्था य
 न ता म नुं य ठ स्तां मु ४५ वी वि धा आ मय न सा व भ रु व नि ॥ पूर्व स वा द भ स ह म्रा क्षि न

मनसिर्दत्तं कृत्वा । नमः प्रणाली श्रमकीव भी कृत्स्ना ह ॥ स वायुर्न भ्रमण नर स कृष्ण
वन्द्यो म प्रार्थना गारिम निर्दु कृत्वा स्त्री शि त्र सि द द्या द्व भी र वानि ॥ अजय लिंगमादा
य क द्या भ्रमण न सृष्ट केः । क न द क स्या थ वायु र्द्व व न्ध प्र कृ कृ म् न ॥ स त्स र्वे क म ना
: कृ र्व सो भू त र्ध र्म पा ग न भानि ॥ अ वृ त्त स दार ता णु क र्म म् न मू र्म ॥ मू र्म सि न

२४

म न

१ मू क के च मि न ॥ अ वृ त्त स दार ता णु क र्म म् न मू र्म ॥ क र्म मा ड्डो ल वा म पा दा सि वं ध न ॥ अ वृ त्त स दार ता
का णि ला र्थ सा थू स न स्या थ वा र्द न ॥ अ वृ त्त स दार ता णु क र्म म् न मू र्म ॥ स त्स र्वे क म ना
मू र्म न स ग मू र्म ॥ यदि स न स न्त क र्म म् न मू र्म ॥ अ वृ त्त स दार ता णु क र्म म् न मू र्म ॥ क न अ क
न पि त्वा तु पा न द न पु प न म् न ॥ व न्ध ना च क र्म म् न ॥ अ वृ त्त स दार ता णु क र्म म् न मू र्म ॥ क र्म म् न
सा तु र्म ल न ता का र्म म् न ॥ अ वृ त्त स दार ता णु क र्म म् न मू र्म ॥ क र्म म् न मू र्म ॥ क र्म म् न मू र्म ॥

गी ॥ रू मि ल ना वृ र्म म् न ॥ अ वृ त्त स दार ता णु क र्म म् न मू र्म ॥ क र्म म् न मू र्म ॥ क र्म म् न मू र्म ॥

लंबावत्ररुनयादगलीमुद्रपणुक्रसुमुनी॥भिनकाकडंघामूलीभिनयप्रकेभत्रमधु
 शिल्लयाहुक्रसुमुनी॥विष्कृकासूलीयपणुद्रावसुमित्वाकनीवन्धप्रमणुक्रसुमु
 नी॥हनिमालत्रसीरुनयात्रदयिप्यलीसेन्धवकूषुयानावगविष्ठा॥कूपिष्ठा
 ईवरेनरुनयादगलीमुद्रपणुक्रसुमुनी॥उईवलीवईभृगंगरुनियद्यलिंगलयदईलिंजि
 लिं

२५

लिंजि

२॥जेनवककटीहनाहल

रुवमि॥वाविबहुमूलंदयिषुकागमगुद्रायिषुालींगलियासमाधोत्याटप्रधानगु
 यंगईरुवमि॥नकादकंहालतागुभाकि॥कयर्दकासाकप्रयात्रदयूनयित्वासुख
 स्थायिषुक्रसुमुनी॥कागमगुद्रायिषुकादंरावयुरुनाईनौरुईरुव
 मिलिंजी॥अवधीमूलंकामात्रीमूलंधूसुनवीर्जकर्यूनजलनयिषुालींगलयद

यि त्वास्ति र्मकामप्रदुवनि॥ सेन्धवटगशकप्यूनधाषकवूर्धमधूनापि कृत्स्निगलपा
 रुधा॥ या नावतयूत्री र्ममधूनापि कृत्स्निगीयलिया कामप्रदुवनि॥ कामावीमूलनाम
 लेनसूत्रनृद (शस्ति र्मरुद्रप्रदुवनि सा॥ यद्रुमिनि जीलसिका सेन्धवेन मिष्ठीक
 लयनार्द्रनीली र्मरुद्रप्रदुवनि सा॥ यद्रुमिनि जीलसिका सेन्धवेन मिष्ठीक

८६

नक्षि० ज्ञानरा२

ववकमि२

प्रावलिमूल

कयसार्द्रगशकप्यूनधाषकवूर्धमधूनापि कृत्स्निगीयलिया कामप्रदुवनि सा॥ यद्रुमिनि जीलसिका सेन्धवेन मिष्ठीक
 लयनार्द्रनीली र्मरुद्रप्रदुवनि सा॥ यद्रुमिनि जीलसिका सेन्धवेन मिष्ठीक
 लयनार्द्रनीली र्मरुद्रप्रदुवनि सा॥ यद्रुमिनि जीलसिका सेन्धवेन मिष्ठीक
 लयनार्द्रनीली र्मरुद्रप्रदुवनि सा॥ यद्रुमिनि जीलसिका सेन्धवेन मिष्ठीक

कावृधि१

लवी नारवाभी व कुमहावधानकु बुकसुकादिपटल जनविंभानिमः॥ ॥ अथर
गवतीरगावनक्रमदवायनू॥ नाना विरुदनिगदिर्ग मनुजन्नादिको जाल । अथर्व (७)
मुनिदाभि यथा को मुकह न निरा॥ वायू भागम (७) ब २१ न था काल स्य ल सं रुधी। स्व
अथर्व गणनाह॥ साधूसोधूकर्तृदेवी प्रत्यमा (५)

नमः गुरुभ्यो नमः ॥१॥

[illegible]

मनुनाभनसर्वजकिनीनांशसम २ वन्ध २ मूर्खकीलय २ हूं हूं हूं हूं ॥ १० गिनगत्ररु
प्रवणनमनुः ॥ ३ हिलि २ हूं २ ॥ १० ह्यननमरिंकामरिमन्युधूलिंदग्रात्सर्वयला
मरि ॥ ममाममा ॥ १० ह्यननघोंवाद्युःयलायन ॥ वदूआवदूआ ॥ १० ह्यननहस्ती ६
यलायन ॥ १० ह्यननगधुयलायन ॥ ३ डीं वदूकनाथवधुमहा

२८

नायहूं हूं ॥ १० ह्यननगधुयलायन ॥ ३ डीं वदूकनाथवधुमहा
३ ग्रासम २ वधुयुवधु हूं हूं हूं हूं ॥ १० ह्यननमहिसःयलायन ॥ ३ प्रममदंनमदय २
वधुमहा नायहूं हूं हूं ॥ १० ह्यननयायत्रागःयलायन ॥ ३ काधनसंकाधनरुदना
यहूं हूं हूं ॥ १० ह्यननगधुयलायन ॥ ३ डीं वदूकनाथवधुमहा

ਸਾਨ

७२

नैनमिखाव-धूत्रेका॥ॐ अथ लसंयल अमूकसामूखी की लय हंरुटा॥ मदननवतु
वकुलपूरुलीकृत्वा रक्कंदनिना ननलिखित्वा नम्यामूखपुदिया की लय चतुः
यश्चानिखन युतिवादिमूखी की लय मि॥ॐ सर्वमानरु अने अमूकसयादी की लय
हंरुटा॥ पूर्वदूद-... यमादी की लय जमिमागमि रमूयमि॥ विकृता ननैयनवलः

२२

[illegible]

यत्राजिकगावृण्डलप्रपेमा धंदवदरुमहिलिखा मालामनुरुधवष्यित्वामदनयूरु
 लिका इदिप्रक्षिप्य स्तुति काष्ठमध्याप्रक्षिप्यगुणः ॥ उं वं मुं महा ना वध विष्णुं प्र त्वामे
 दने ॥ उं वं मुं महा ना वध अमर्कं ह न ध ग द्वापय हं दट् ॥ ७० निजयन ४ म ४ म ना ७ मो ८
 वापयगुण एव न व ॥ ७० वापयगुण ॥ उं जय २ ये ना जय निर्जि जय नु ही २

१००

२६२

नारसुदामा २४ उदम ॥ श्रीकर्मवृत्त २ उं वं मुं महा ना वध हं दट् ॥ ७० निजयन कर्णट
 लिरि त्वानी सप्त वष्य वाह कर्ण णि न सिक दो वा धा न प्र न् ॥ य न प्र न् न रु व नि ॥ उं
 वं मुं महा ना वध स न य स २ ख २ खा हि २ ॥ ७० य प्र २ म न २ मान य २ अ म र्क हं दट् ॥ ७० म म
 न कर्ण क लि रं वि त्वा पूर्व व त्पूरु ली का य प्र क्षि प्यं यी उ ल प्र मा ॥ ७० ना रि की ल क वा द
 न

四

कीलपित्वा ॐ नमः श्री कृष्ण निखनम् ॥ सकादनमानममि ॥ ॐ नमः महा
नाथ श्री कृष्ण श्री कृष्ण श्री कृष्ण ॥ निम्न सुकाकवासी गद्दीत्वा ॐ नमः श्री कृष्ण
समाप्तमगारिममिर्मगद्दीत्वा ॥ ॐ नमः श्री कृष्ण श्री कृष्ण श्री कृष्ण ॥ ॐ नमः श्री कृष्ण
नीममानं ॥ ॐ नमः श्री कृष्ण श्री कृष्ण श्री कृष्ण ॥ ॐ नमः श्री कृष्ण श्री कृष्ण श्री कृष्ण ॥ ॐ नमः श्री कृष्ण

٩٥٩

४२

स नावधदं हं ॥ पूर्णमास कृकृ नमः ॥ मूली गृहित्वा साध्युनिक निद्वयं हन्त्या दान्यानी विदुः
द्वयमिति ॥ ॐ वधुमहा नावध जां जां जो धान नूय यट २ प्रयट २ रुत २ घागय २ कट २ प्रसू २
न २ प्रसू नय २ कील प्र २ ऊमूय २ सुमूय २ अमूकं हं हं ॥ ॥ हं हं कूर्म समालिखा गाल
केन य उं गुली । वधुः यादयू जी का नं हं का नं मखमधन ॥ गह्व द्विष्टी न गालि खनू सा

取

धक नु पृष्ठतः पर्व ॥ मालामनु शसिव श्रु पूजा रु कौसमा नरु ॥ वृष्ट काय निरसना स्य
कूर्मवर्देना कादय नु ॥ न क सृष्ट शसिव श्रु पादवां रु न निरिमेत ॥ ना उय द्वा मया द
ना मूर्क मव भान नय ॥ सय वा नान न क मूर्ख मूर्ख ॥ ॐ विलि मिलिल लिलि ग हूं हूं
॥ वहुः सं ॥ ॐ विलि मिलिल लिलि ग हूं हूं ॥ ॐ विलि मिलिल लिलि ग हूं हूं ॥ ॐ विलि मिलिल लिलि ग हूं हूं ॥

[illegible]

प्रलिख इवी द्विउज्ज्वलं कृमनसनिर्वाभांकुभाहसं कामात्कटरीषधी ॥ गजमदमगाल
 कनकनजसुलाकृंकुमेदिदरुपत्तमन्त्रादुनादि ॥ ॐ भिनसिद्धीं द्विद्विक्तीं नारोष्ठं मरु ॥
 नमो मन्त्रभवानकसुष्ठु संवत्सरीयूत्रयकवालसीयूटपुद्गिप्यस्यमधूपूत्रिम
 मदनेमययस्यसिवा ॐ कुरु प्रववभिः स्ताने निखनेन ॥ वामपादनाकमयजयन् ॥

१०४

माला २

(७५२)

यं वविं नित्यं प्रशस्तं नदीतननि ॥ ॐ आकय २ माहय २ अमूकी भवभांकु नृस्वाहा ॥
 उदनकीटं सुवूर्ध्वं कृत्वा मुक्ता नामिका नकाया वटी कृत्वा रिमन्तु खानवानेन्द्राद्व
 भीकनादि ॥ ॐ हुनक यशो मैरेन स्यायक्षोक्षो नजदको मृदकस्यमाल्यं अनेन यूर्ध्वं नयवृ
 र्दिनी जीपदयदधावनिमूर्च्छिनी जी ॥ ॐ ध्वनगृधिनिखादिपिव २४ नृविशिखः २
 धा

हं २ सः २ ॐ वधु महासना द्वापय स्वाहा ॥ अथ वा ॥ ॐ संक्रा द्धिर्धुं हं हं हं हं ॥ सर्वविषीनाम
यमि ॥ ॐ नागत्रिवासलेह न ४ रुद्र ॥ अरिमक्तिममदा द्वात्रि कया वासय्य प्रवक्ष्यामि ॥ ॐ
आधुना ॥ शम्भु जीवभा क नृत्वाहा ॥ स्यान्वि (मं) ॥ अथ यथा दाना द्वाभी कत्रर्ध ॥ नभावी
नया ॥ ॐ ममेष्टु ॥ ॐ नमो ॥ ॐ दकना रिमक्तिमनय हूः दालना रिमिनी ह

कि॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ आदिष्टास्तथैवैतान् वासुदेवसेवितव्यगन्तुं
पश्यन्ति नरैः सर्वैः ॥ सर्वव्यापकं कर्तुं यदि विवर्तनाभाप्रति ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

五

नि २

य

मम्यधुमहाक्राधाय इतु २ वृत् २ निष्ठु २ वन्ध २ माहू २ रुत २ मृग २ हं हृद् ॥ पृष्यादिकं यनि
उप्यदानादधमातयमि ॥ ईनमात्रत्तप्रयापउंरः सविस्मनेखाता ॥ कनकी पृषुवीनि
कया सर्वरु ॥ नाभमि ॥ ॐ ह्यकल्पवीनाखाणीवधुमहात्रायधनकुनाताशिरुदः
नियमि ॥ ॐ ह्यकल्पवीनाखाणीवधुमहात्रायधनकुनाताशिरुदः ॥ अथरुगवानाह ॥ ईवधुमहात्रायधनसर्व

१०५

मम्यधुमहाक्राधाय इतु २ वृत् २ निष्ठु २ वन्ध २ माहू २ रुत २ मृग २ हं हृद् ॥ अततवधुमहात्रायधनध्वात्तासर्वदुष्णा
॥ उदुन्वना ॥ निधनयट ॥ मुद्रायित्वानीनन्धुसर्गलं त्रंसर्जनसंयिष्ठा ॥ रुस्मिन्प्रदिह
प्यवलिंकात्रयम् ॥ उदकं नदीयहालनाहूलमिस्तिर्न ॥ नाशेवनदयुस्तेनखधुव
यनिष्ठु ॥ हंकात्रेधविशूक्तगदधमि ॥ मृगजलूकवूर्धसहितलाक्षानीजिनवर्ध

लो

[illegible]

लमकोक... ॥ धूसूनयव्यमध्वसुंउकंसरान्धियूव्याः
मध्वप्रदिव्या. यानमागुहाभिन् ४०२ लैरुवनि ॥ काजिकनभ्यनभादः ॥ कूकूली ६
गर्हभायमिमाधूपिर्नवष्टिर्नमयूनविर्हंसवानप्राभिदनविर्गुदननि ॥ प्रवसवान
भादः ॥ काकहृदयनूधित्रधमंमुयगुनत्यदा लखन्यालिरित्त्वामर्कयस्यविष्णुमी ६

^व ^{पर}
 प्रक्षिपेत्सकाकेलखाग्रं ॥ उंकाककूदनीकू ईनीदवदरं काकनरुहायप्रस्वाहा ॥
 रण ॥ कार्त्तमर्हकृत्वास्त्रीविष्टीव भिषकयागिकासैर्गीप्रक्षिप्य ज्ञापयन् ॥ गस्यामार्गीव
 धनं ॥ स्त्रुहीशीत्रराविमहिलमेलसुखभाष्टिना नूहाः ॥ प्यगारवर्गि ॥ मूर्च्छिजनमाहः
 ॥ विनालीगर्भभाषा नानाजीवार्त्तभाषा द्वाहीरिहो धूयात्रिष्टुनप्यन ॥ माक्षिकधूपन

१०५

६१

^{६२} ^{५२}
 माहः ॥ प्रसूकयालप्यवदरं न नूहा निगालीवह धारणवपित्वादरं सुक्ष्मकर्मप्रवि
 प्रीतिप्यन ॥ हसं कालेनात्माहः ॥ स्त्रीगर्भभाषा प्राधूयात्रिष्टुनादिनि ॥ गुग्गुनूधूप
 माहः ॥ रुकमेलवह नूनीग्रहवर्ण ॥ सप्यादृष्ट्यर्क ॥ दीपनिर्वाह ज्ञेयगन्धक
 वूर्ध्दानात्पू नहलनि ॥ मूर्च्छिनीशवालजलो करु कवसाहिः पादो सुक्ष्मपित्वाद

क

लीयप्रधवेष्टाहर्लगात्रप्रमगिनदमग्न॥स्रुहिमूलंउठनरुद्रप्रनिडाखवनि॥काः
मात्रीमूलं॥लाघावन्धप्रनिडाखवनि॥नागवदनेमूलंदाधयूष्यमूलंहनिडाखवनि॥
ले॥विष्णुदुर्गादूदकपनिद्रापीत्रम॥॥मल्लमलीमूलंहिंउगुलिकाखननात्यूष्य
यावन्नाकादुर्गादिनद्राप्राम्॥मामूलनवावित्रवर्नरुवनि॥स्रुहीक्षीत्रमर्कवी

१०५

त्रीयुर्वर्गमिउठनरुद्रदुर्कयनंमि॥दूदून्दत्रीयूर्ध्वनद्याटकतासीमुद्रयदाहाननकना
मि॥यन्त्रनद्राकालननभैरवाभादः॥कैतकीमूलंमि॥त्रिदिवन्धयन्स्वर्कनमूलंह
रुगोलमूलंमूरव॥यूष्यनद्रुष्टं॥मत्याटप्रदूरुनादिभिर्हन्त॥ममकमि॥खरुत्वागुह
माध्यात्रकिश्चित्तिचापिबन्॥मम्राद्यार्गनरुवनि॥॥मनाकवीजयूर्ध्वपादूकाद्वर्गह

क
निधवर्मनो कर्मरुलनमर्जनि। उषर्नी चर्वयित्वा जिह्वा मलं स्थापय ॥ नय कल्लं वाटध
नान्नेदं नि ॥ सूतक कान्तं प्रहस्ति मुष्टीणां नगरं यदनी ॥ ७७ वनं न प्रपूर्वमूलं पृथः
उत्तरं यथा वा पातनं न वा भित्तं सा दो वन्धयत्का कुर्यं न न वो न रयं वा न यति ॥ गृध्रव
सा ॥ उत्तु कवर् ॥ यो यं संधा दु का नृत्ता नि दू नृगमनं रुवनः ॥ सर्वरुलममस्तु रुनः
पा

गमना १

१०६

सुदिवं प्रसन्नं चिन्मिधिवान्नं उक्तं मूकमिश्रा रत्वा वा मया लिङ्गिना गृहीयाद्गुप्तो
न स्थापय ॥ उक्तं च रत्नं च मालामर्कं शकार्यं ॥ यस्य यस्य न कं न रा वय द्रुमः ॥ गद
कसिं च नं न मा सनी स्तानं कं न दहि सा न शर्कलं कं न रुस्मना वार्द्धिनी ज्यं न कया ल
कं ॥ न द्रसा सु द्रसा सादि न कं न य वनं न द्रुप न य नादि यत्ने कत्वा पुनः पुनान्नं का वलि

मव

लेप

कृत्वा २

^ह
 धिरुवमि॥ कयिंरुंरुं ललि प्पानूगनरा (कु लययन। ननुदुग्धं ^{होव} यावय नमू नदि
 नदधिधिरुवमि॥ अयकघटदुग्धमार्जितं यावयं कानदधि (घेयं घटं र ऊ
 मेनदधियं धारुवमि॥ अर्क दीपे नवघटं विरा ववदुधमननुक्रियं जलं
 कके मितं कथं॥ किपुथमय नदमदि नरसं गृहीत्वामुष्टि द्रवना (धार्ड
^ध
 पं२

विद्यासुने जलं पुनि धारुव उज्ज्वलं राव पाज्जदक कंरुः शुषानि॥ अ (धारुसम नूवयूत
 यमि॥ नविदिनसंतिं शं मूलमं यामार्गमूलमत्या प्रपुथग्मुद्रि नददु। ओकटि
 धानिनी मूधनः॥ वदु आ नबीजवा लामुद्रि न घट कथ्यं टरुल पुद्रुया नयनमि॥
 नने वलियं पुप्रयटिका लाह धा जल नमक्रु मि॥ इमिल नारव प्राकपा भूई मेलं
 वं च वान २

[illegible]

वा। उ। सं। स्त्री। क्रि। मा। ए। न। पु। र्प। क। न। द। तु। म। क। र्क। ॥ य। तु। र्म। तु। ल। वा। ह। न। द्य। मूर्त। भ। न। धा। उ।
 मी। ॥ द। कि। द। स। र्भ। वा। ह। न। व। द्धि। म। तु। ल। म्। वा। ह। न। वा। म। न। स्य। र्भ। वा। ह। न। वा। य। म। तु। ल। म्।
 द्य। न। ॥ वा। म। द। दि। म। स। म। स्य। र्भ। ह। व। स्मा। ह। न्दु। म। तु। लं। ॥ वू। द। म्। व। स्फ। द्म। दं। द्य। वा। नू।
 श्री। म। ॥ वा। म। द। दि। म। स। म। स्य। र्भ। ह। व। स्मा। ह। न्दु। म। तु। लं। ॥ वू। द। म्। व। स्फ। द्म। दं। द्य। वा। नू।

११३

(वा। हि। स। म्। न। न्दु। क। (ध। व। ह। न् ॥ पु। वि। भ। न्। ई। र। व। त्स्। वि। :। सि। नि। नि। भ। न्। नू। य। नः। वि। न।
 (वा। निः। म्। न्। न्। वा। यो। मा। व। जी। वं। पु। व। र्क। ॥ पु। वि। भ। न्। कृ। म्। का। र्क। यः। पु। न्। क। स्तु। स्य। धू। न्।
 नू। नि। भं। र्ग। म्। दु। का। र्क। या। नि। भ्य। ला। र्क। म्। का। म। नः॥ व। लु। ना। म्। स। मा। धा। य। सुं। स। पु। र्क। कृ। न्।
 आ। न्। र्क। न् ॥ पु। वि। से। र्क। ग। ध। म्। द्वा। र्ग। भ। न्। स। ह। सा। दि। सी। र्वा। य। ॥ सि। ध्म। न्। न्दु। द्य। ॥ इ। व। वः

[illegible]

नमः सर्वज्ञाने सर्वज्ञानी सर्वज्ञाने ॥ समन्वाह न मां शुद्धं रुद्रं रुद्रविष्णुं च वरुणं
मानं यनेति सर्वज्ञानि सत्यमनद्वयमाहं ॥ न त्वाहनेवमां गदाकर्तुमध्यवि
रावमन ॥ ७८ धूम सर्वदधमसर्वसंनिहिं यथा ॥ न त्वाहनेपुनरवित्वा तुलाकृच्छ
प्रयच्छमि ॥ नासायां च न त्वाध्यात्वा ज्ञानी सर्वगंधकं ॥ त्रिजायां च न त्वाध्यात्वा दू

^{५५}
 नं स्वादं प्रविष्टम् । स्वलिङ्गं च त्वं ज्ञानी न सर्वस्य भक्तिं ॥ मित्रा मध्यमं च ध्यात्वा
 त्वो सर्वसामर्थ्यं विद्मः । यत्प्रयत्नेन विद्मः वायुना समनसीकृतं ॥ निरुद्धं न गुरु
 व, न देवयुगि विन्दत । अन्तिकं प्रोषि क्व वन्द्यं मा कृषिमान् दानकथा ॥ उच्चाटनं च
 सर्वं नैव ॥ सर्वं नैव यत्प्रयत्नेन विद्मः ॥ कृष्णं कादिप्रयागं वन्दुर्दृष्टिनिपात्रमग्नौ ॥ वामाव

११५

नाकिनी दृष्टा कृष्णं कृतं ॥ जीकृतं ॥ दक्षिणा कर्षणी रुद्रा, पूनकं दानि पात्रिणः
 ॥ ललाटस्था गुमादृष्टिः ॥ ज्ञानशीतलकं मसा ॥ नासिकागुलिना दृष्टिः ॥ सुमुखं न
 हि कुर्यात्कीदृशं नायकं ॥ नृदी वृद्धय पूनकः ॥ नेत्रकः सनपव दक्षिणं मुखं क
 : सप्तलक्षं ॥ विनिर्जना हि यज्ञां संयुक्तं दृष्टिनिपात्रमग्नौ ॥ सर्वसामर्थ्यं युकु

नीकं

२. मदनलुङ्गि शान्ति ॥ २ ॥

[illegible]

वाहंष्टिक...
समं हत्कर्षं वेधात्यक्रुप्रपहा॥६॥
समं गल कागुप वेधादिदिनेः॥ सनने कर्षं पार्थद्विमासेः॥ कर्षं मूलरह
मह्यमस्तु कागुपुथकपुथक वेधादिनेकन॥ यादीगुपुमानत्यनारिष्यक वेधा
त्यह्यमस्तु॥ नासागुमांसं मेथिल्यासफ नागुह॥ कथालमांसं दात्य २३ मासेः बहूः

स्य नृनादभितास्य स्यात् ॥ नासिका नृनात्स्य कदिनेः ॥ हृदयनिम्नात्स्य हृ ॥ त्रि
हाम ॥ कृत्स्नं कृत्स्नं कृत्स्नं खयाद्वि नागुह ॥ नखत्रक नादभितास्य स्यात् ॥ दन्त ॥ भाषात्स्य
नासिका ॥ अत्र नृनात्स्य स्यात् ॥ भीमादो कालविषय्ययात्सर्वगुच्छिददभिता
स्य स्यात् ॥ इका नृनात्स्य भीमा नृनात्स्य कालविषय्ययात्सर्वगुच्छिददभिता
स्य स्यात् ॥ इका नृनात्स्य भीमा नृनात्स्य कालविषय्ययात्सर्वगुच्छिददभिता

न्योत्वा १ ६

कृत्स्नं खयाद्वि नागुह ॥ नखत्रक नादभितास्य स्यात् ॥ दन्त ॥ भाषात्स्य
नासिका ॥ अत्र नृनात्स्य स्यात् ॥ भीमादो कालविषय्ययात्सर्वगुच्छिददभिता
स्य स्यात् ॥ इका नृनात्स्य भीमा नृनात्स्य कालविषय्ययात्सर्वगुच्छिददभिता
स्य स्यात् ॥ इका नृनात्स्य भीमा नृनात्स्य कालविषय्ययात्सर्वगुच्छिददभिता
स्य स्यात् ॥ इका नृनात्स्य भीमा नृनात्स्य कालविषय्ययात्सर्वगुच्छिददभिता

श्री

[illegible][illegible]

पीतवर्णकु, अममेषानकाशकामधुर्वेककवर्णितुपुत्रावलंकलपगू॥सूर्या
 संवाथ(अर्ध)पीतवात्रमेवया॥अमंवाप अशिवेई, अकनृपविबिक्तयम्॥लीव
 नामपिनका(एव, वन्दा)कविधात्रिणी।वामदक्षिणकनार्योद्यान्ते, अत्रच कन
 नेअनर... धनूर्वाधनायनां।नकावायवाको(एव)मानकीप्रीतमं

१२

८धोन्ध... अमामेषानकाशकानात्रिणीम्वत्रदांसंबंधा वामनिलात्यत्र
 धात्रिणी॥नुगाअन्दासनाःसर्वाअूर्ध्वपर्यङ्कसंसिन्धाः।नागवर्जान्यस्यपूर्वद्वाराकक
 नासनां॥रवजखर्यत्रधनांनकां, द्रववजीकुदक्षि(एव)कर्हिर्नर्जनीधनांतीनां, यमनक
 नविरुनां॥पश्चिममाववजानुयर्ध्ववजधनांकलां।मपूत्रपिचनेम्रानुवन्धः

अथ प्रसंगि १७२ प्रसंगवत्तु नमः ॥ अथानिशीपीनवत्तु नमः ॥

स्त्रीसंविंशत्यस्य सूर्या तनास्तमः ॥ प्रसंगवत्तु नमः ॥ सर्वाः संकु दामुकम ईजाः ॥ यः
तानादि यदाः को धावत्तु नमः ॥ प्रसंगवत्तु नमः ॥ पाणि न्यस्तु समन्वि
तः ॥ अथानिशीपीनवत्तु नमः ॥ ॥ अथानिशीपीनवत्तु नमः ॥ ॥ अथानिशीपीनवत्तु नमः ॥

१७२

रंवे २

को धि ॥

अथानिशीपीनवत्तु नमः ॥ अथानिशीपीनवत्तु नमः ॥ अथानिशीपीनवत्तु नमः ॥ अथानिशीपीनवत्तु नमः ॥
अथानिशीपीनवत्तु नमः ॥ अथानिशीपीनवत्तु नमः ॥ अथानिशीपीनवत्तु नमः ॥ अथानिशीपीनवत्तु नमः ॥
अथानिशीपीनवत्तु नमः ॥ अथानिशीपीनवत्तु नमः ॥ अथानिशीपीनवत्तु नमः ॥ अथानिशीपीनवत्तु नमः ॥
अथानिशीपीनवत्तु नमः ॥ अथानिशीपीनवत्तु नमः ॥ अथानिशीपीनवत्तु नमः ॥ अथानिशीपीनवत्तु नमः ॥

五

[illegible]

128

नारयणीय तु महाशय दानं देवगीसाधनयटलः
 निममः ॥ ॥ ॐ नमो वरुणवान श्रीवत्सलः श्रीवत्सलः श्रीवत्सलः श्रीवत्सलः
 लघिनमस्त्यनन्दनिनि ॥ ॐ ह्येक श्रवीत्रै नाम श्रीवत्सल महाशय दानं समाप्य
 श्रीवत्सल महाशय दानं समाप्य श्रीवत्सल महाशय दानं समाप्य श्रीवत्सल महाशय दानं समाप्य ॥

पुगनन मंग्या प्रह संतकाले द्वितीयाः धेनु नृवा ने भुरहि लिंरु धमि ॥ भुरहं ॥
 नृवा ने भुरहि लिंरु धमि ॥ भुरहं ॥
 नृवा ने भुरहि लिंरु धमि ॥ भुरहं ॥
 नृवा ने भुरहि लिंरु धमि ॥ भुरहं ॥
 नृवा ने भुरहि लिंरु धमि ॥ भुरहं ॥

नृवा ने भुरहि लिंरु धमि ॥ भुरहं ॥	नृवा ने भुरहि लिंरु धमि ॥ भुरहं ॥	नृवा ने भुरहि लिंरु धमि ॥ भुरहं ॥
नृवा ने भुरहि लिंरु धमि ॥ भुरहं ॥	नृवा ने भुरहि लिंरु धमि ॥ भुरहं ॥	नृवा ने भुरहि लिंरु धमि ॥ भुरहं ॥
नृवा ने भुरहि लिंरु धमि ॥ भुरहं ॥	नृवा ने भुरहि लिंरु धमि ॥ भुरहं ॥	नृवा ने भुरहि लिंरु धमि ॥ भुरहं ॥
नृवा ने भुरहि लिंरु धमि ॥ भुरहं ॥	नृवा ने भुरहि लिंरु धमि ॥ भुरहं ॥	नृवा ने भुरहि लिंरु धमि ॥ भुरहं ॥
नृवा ने भुरहि लिंरु धमि ॥ भुरहं ॥	नृवा ने भुरहि लिंरु धमि ॥ भुरहं ॥	नृवा ने भुरहि लिंरु धमि ॥ भुरहं ॥

श्री गौतमसूत्रादः—५७ नानाहिरुदगठिगययं नुमनु ७३ दहस्वनय ८२
 कृत्वा विपटलः ५१ कृत्वा नयटलः— ७४ दहस्वनीसाधन ८३
 कृत्वा विपटलः— ५५ वायुभाजयटलः— ७५ ७९३
 कृत्वा विपटलः— ५६ कृत्वा विपटलः— ७६ ८१

॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
 ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
 ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
 ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

जीयुष्टामाहं नाथ किमर्थमि च न सहं कं ॥ एक स वि स संहा च
परीयुष्टामाहं नाथ किमर्थमि च न सहं कं ॥ एक स वि ल संहा च व सु महा लाष णी
या स मा या ग न नी श्व रे सु ख नू पी न ॥ य शु या या त्म कं न च

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो नन्दसुत च लख्मणसुत सर्वदेव सुसविता ॥
तुल्यो सर्वोपचिका जिना ॥ सत्वाथे हि वे कर्णातः यावदाह न सपवी ॥ अथ सम ५१
दुर्वाच ॥ अकारण किमार्थान् च कालेन किमर्थान् ॥ लका र्थे कोमूयान् किदर्थान्
॥ अकारणान् ॥ अकारणान् काली मी सहास हावपूकी ॥ चकार वनान्

॥ का २ मालिनी प्रसूसाधम २ मला कालवृद्धा ॥ सुप्रसिद्धा सिमा ६
वदुष्टप्रदं शान्

